CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

खण्डकाव्य

रत्नावली

मानस संगम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

खण्डकाव्य

रत्नावली

श्री रामगोपाल 'भावुक', कमलेश्वर कालोनी
भवभूति नगर (डबरा) जि. ग्वालियर (म.प्र.)
के उपन्यास ''रत्नावली''का भावानुवाद

रचयिता :-
अनन्त राम गुप्त
बल्ला का डेरा, झांसी रोड़
भवभूति नगर (डबरा)
जि. ग्वालियर (म.प्र.) 475110

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

खण्डकाव्य - रत्नावली

प्रथमसंस्करण – सहस्त्राव्दी 2000
रचयिता – अनन्त राम गुप्त
सर्वाधिकार – उपन्यासकार एवं रचयिता के आधीन
परामर्श – डा॰ बद्रीनारायण तिवारी शिवाला, कानपुर – 1

प्रकाशक – मानस संगम, प्रयाग–नारायण मंदिर
शिवाला, कानपुर – 208001

मुद्रक - विपुल ऑफसेट प्रिन्टर्स
गोवर्द्धन मार्केट डबरा जिला ग्वालियर (म.प्र.)
07524 . 22535

आवरण – प्रख्यात चित्रकार डा॰ दुर्गा शर्मा (रतलाम)

मूल्य –25/–

RATNAWALI POETRY by ANNTARAM GUPTA

मानस संगम

मानससंगम, प्रयागनारायण मंदिर,
शिवाला, कानपुर - 208001

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

श्री

परमहंस, मस्तराम गौरीशंकर बावा जी

के

श्री चरणों में

सादर समर्पित।

लोकार्पण
सुविख्यात संस्कृतज्ञ
पं० गुलाम दस्तगीरः

समर्पण
पद्म श्री
गोपाल दास नीरज

अनन्त राम गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"रत्नावली" पर एक दृष्टि

बद्री नारायण तिवारी

आज वातानुकूलित कमरों में बैठ कर जो लिखा जा रहा है उसका छणिक प्रचार तो मिल जायेगा किन्तु वह रचनायें कालजयी नहीं हो पातीं । भक्तवत्सल श्रीराम पर एक ओर जहाँ जनभाषा में विश्वकवि तुलसी ने "रामचरित मानस" की रचना करके घर घर पहुँच गये – वहीं दूसरी ओर पांडित्य प्रदर्शन में केशव की "रामचन्द्रिका" पुस्तकालयों की अलमारी में ही सीमित हो गई ।

महापुरूषों के जीवन की कुछ घटनायें इतनी हृदय स्पर्शी होती हैं जो उनकी जीवन धारा को एक नया मोड़ दे देती हैं । आज कालजयी संत कवि गोस्वामी तुलसीदास को उनकी अतिसुंदर पत्नी रत्नावली की एक घटना ने उनको "काम" से आसक्त त्याग कर (राम) की ओर समर्पित कर अमरत्व प्रदान कर दिया ।

रत्नावली पर अनेक रचनाकारों ने अपनी लेखनी में संजोने वालों में राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त, महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी (निराला), राष्ट्रकवि पद्मश्री सोहनलाल द्विवेदी, विकल गोंडवी, सुकवि डा0 लक्ष्मीशंकर मिश्र (निशंक), डा0 सय्यद महान हसन रिजवी, (पुण्डरीक), श्री दीन मोहम्मद (दीन), श्री जय गोपाल मिश्र फतेहपुरी आदि की काव्य परम्परा की लीक से हट कर चर्चित उपन्यास (मानस का हंस) में रत्नावली का वर्णन श्री अमृत लाल नागर ने प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। उसी प्रकार म.प्र. के ग्वालियर जन पद के भवभूति नगर (डबरा तहसील) के श्री रामगोपाल "भावुक" ने (रत्नावली) उपन्यास प्रकाशित किया। भावुक जी के भावना प्रधान "रत्नावली" उपन्यास ने अपने नाम की सार्थकता प्रदान की । उसी कृति की भावनाओं से उत्प्रेरित हो उसको अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत पत्रिका "विश्वभाषा" के विद्वान संपादक प्रवर पं. गुलाम दस्तगीर अब्बासअली विराजदार ने (रत्नावली) का संस्कृत अनुवाद करके धारावाहिक प्रकाशन भी कर दिया । उसको बहुत सराहा गया । भावुक जी की (रत्नावली) का नाट्य रूपांतर डॉ0 वी. एल. कारपेंटर व्याबरा (रायगढ़) ने भी किया है।

यह संयोग ही है, कि इस कृति के रचयिता महानगरों की चकाचोंध से दूर आंचलिक क्षेत्र निवासी कवि श्री अनन्तराम गुप्त ने अपनी काव्यधारा में किस तरह प्रवाहित किया, कुछ रेखाकिंत पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

•••रतना पितु गृह आगई, तुलसी लौटे आय ।
घर सूना लख चल पड़े, ससुर गृहहिं अकुलाय ।।
•••घर पर चढ़ पत्नी ढिंग आये । जिसने ताने दिये सुनाये ।।
•••हाय बाबरी मति भई, दिया तुम्हें उपदेश ।
पतनी गुरु नहिं बन सके, बिन गुरु ज्ञान न लेस ।।

इसके आगे कवि ने कितनी मार्मिकता से सभाज में प्रचलित सामान्य दिनचर्या की तुलना करते हुए कितने सुन्दर ढंग से भावों को व्यक्त करते हैं

•••क्या क्या बात न कहती नारी । सुन कर पुरुष न तजते प्यारी ।।
दो दिन को बस मैके आई । वापिस वहीं पहुँचती जाई ।।
माना प्यार आप अति करते । विरह न दो दिन का सह सकते ।।
निकली बात तीर की नांई । चुभी हृदय चल दिये गुसांई ।।
•••हाड़ मास हित इतनी प्रीती । रटते राम कहीं यह रीती ।।
तो उद्धार तुम्हारा होता । ये ही मान लगाया गोता ।।

तुलसी फिर भी कहते हैं –

•••देख विचारो आप ही, जो कुछ कहा क्या सत्य ।
कहते रत्ने तुम बिना, लगता कहीं न चित्य ।।
•••कुछ दिन बाद पता यह पाया । साधू उनको बनना भाया ।।
सुन रतना चिंतित हुई भारी । साधु व्याधि क्या होती नारी ।।

रचनाकार की निम्न लिखित पंक्तियों में जो भाव प्रस्तुत है वह कितनी सहजता से नारी के दोनों रूपों का कितना सुन्दर रूप प्रस्तुत करते हैं –

नारी का स्तर घटा, कहें नर्क का द्वार ।
पतनी धरनी एक सम, उपजावै संसार ।।

इस प्रकार रचनाकार नें जिस चिंतन को अपनी लेखनी से रेखाकिंत किया वह स्तुत्य है

•••हाड़ मांस से प्रीत कर, जान सके जग झूट ।
ऐसा को तलवार दो, धरै म्यान इक जूट ।।

मानस संगम कविवर अनन्त राम गुप्त के रत्नावली खंडकाव्य के प्रकाशन हेतु आभारी हैं । पाठक इसके पठन पाठन से निर्णय करेंगें कि कृति के भाव कितनी सरलता से व्यक्त हुए हैं ।

2 नवम्बर 2000

बद्रीनारायण तिवारी

हस्ताक्षर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सम्मति

कवि अनन्त राम कृत 'रत्नावली'

उपन्यास रत्नावली, भावुक जी की दैन ।
परित्यक्ता रत्ना सदा, व्यथित रही दिन रैन ।। 1 ।।
नारी जीवन की व्यथा, सहन न हुई अनंत ।
उपन्यास की कथा को, किया पद्य मय संत ।। 2 ।।
रामायण सा वन गया, रत्ना चरित्र महान ।
कृति–अनंत–अनुपम सुघर, प्रेरक सुन्दर गान ।। 3 ।।
रत्नावली चरित्र लिख, वन तुलसी से सन्त ।
साधबाद तुमको अमित, कविवर ! श्रेष्ठ अंनत ।। 4 ।।

डा0 जमुना प्रसाद बडैरिया
सेवा नि. सहा. प्राध्यापक
सुभाष गंज–भवभूति नगर (डबरा)
जिला ग्वालियर (म.प्र.) 475110

आपकी सारस्वत अनुभूतियों द्वारा भावुक जी रचित रत्नावली का भाव रूपान्तर बड़ी सादगी, सरल एवं स्व वाचित भाषा में सटीक तथा सारगर्भित बन पड़ा है । रचना तथा पद्यानुवाद में पूर्ण साम्यता का पाया जाना आपकी अनूठी प्रतिभा का अवर्णीय द्योतक है ।

आपकी लेखन शैली, चिंतन एवं लेखनी की प्रतिभा को उत्तर प्रगति की कामना सहित सहस्त्रशः साधुवाद ।

वी. आर. प्रजापति
" मन मस्त "
भवभूति नगर (डबरा)
ग्वालियर (म.प्र.) 475110

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

रत्नावली की पीड़ा

तुलसी को काम से राम की ओर मोड़ने का श्रेय उनकी पत्नी रत्नावली को ही है । आज से पच्चीस सौ वर्ष पूर्व वुद्ध ने घर छोड़ा था।दूसरों की पीड़ा से क्षुब्ध होकर, तुलसी ने पांच सौ वर्ष पहले घर छोड़ा था, पत्नी की फटकार से मर्माहत होकर । तुलसी सामान्य गृहस्थ से संत हो गये । वुद्ध राजकुमार से भगवान पर इतिहास के पास न यशोधरा के आंसुओं का हिसाब है न रत्नावली की पीड़ा का।

तुलसी के जीवन को आधार बना कर नागर जी ने मानस का हंस लिखा रागेय राघव ने भी रत्ना की बात पुस्तक लिखी है भवभूति नगर (डबरा) के उपन्यास कार रामगोपाल भावुक ने भी अपनी बहुचर्चित कृति रत्नावली को रत्नावली के सूखे आंसुओं से गीला करने का प्रयास किया है । इसी उपन्यास का भाव मय रूपान्तरण कवि अनन्त राम गुप्त ने अपनी वुन्देली मिश्रित हिन्दी में किया है । दोनों कृतियों में केवल गद्य और पद्य का ही अन्तर नहीं है बल्कि दोनो व्यक्तित्वों का भी अन्तर है । एक का उपनाम भावुक है दूसरे का मन भावुक है। तभी तो इन्होंने इस कृति का भाव मय अनुवाद किया है यह अनुवाद कैसा है इसका निर्णय तो सुधी पाठक ही करेंगे ।

रमाशंकर राय
अध्यक्ष – मुक्त मनीषा साहित्यिक एवं सांकृतिक समिति
भवभूति नगर (डबरा) 475110

राजापुर को तज किया चित्रकूट में बास।
रामायण रच के हुये तुलसी तुलसीदास ।।
भावुक ने रत्नावली, लिखडाला इतिहास ।
भावानुवाद अनन्त ने लिख कर किया प्रकाश।।

सियाराम सर्राफ, उपाध्यक्ष मुक्त मनीषा

रत्ना नारी रत्न हैं, अनुपम जिनका त्याग,
राम काज के हित लिया, प्रियतम से बैराग ।
तुलसी–रत्ना प्रेम की, गायें कथा अनन्त,
रोम–रोम में रम रहा भावुक हिय अनुराग ।।

धीरेन्द्र गहलोत "धीर"सचिव, मुक्त मनीषा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हृदय से

कवि न होउँ नहिं वचन प्रवीनू । सकल कला सब विद्या हीनू ।।

प्रिय पाठको

श्री भावुक जी का उपन्यास रत्नावली पढ़ा । उसे पढ़ कर मेरे मन में यह बात आई कि महिलाओं एवं हरि भक्तों के ज्ञान वर्धन तथा समाज को सुझाव देने हेतु इसमें बहुत से तथ्य हैं । यही समझ कर उसका भावानुवाद करने की उत्कंठा जाग्रत हुई । यह उसी का साकार रूप है जो परमहंस मस्तराम गौरीशंकर बावा की कृपा से आप सब लोगों के समक्ष प्रेषित हुआ है ।

परमहंस मस्तराम गौरीशंकर सत्संग समिति,
कमलेश्वर कालोनी, भवभूति नगर (डबरा)

के समस्त साधक महानुभावों की कृतज्ञता का आभार स्वीकार करता हूं कि जिनके सहयोग से इस कृति का मुद्रण हो सका ।

मुक्त मनीषा साहित्यिक एवं सांसकृतिक समिति,
सुभाषगंज, भवभूति नगर (डबरा)

के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य गणों का आभार मानता हूं जिनके सत्संग एवं संगोष्ठियों द्वारा ज्ञान अर्जित करता रहा ।

अंत में डॉ.सतीश सक्सेना 'शून्य', राजवली सिंह चदेंल, आर.पी. सक्सेना 'रज्जन', डॉ.जमुनाप्रसाद बड़ेरिया एवं वेदराम प्रजापति 'मनमस्त' का आभार व्यक्त करता हूं इन्होने पुस्तक के संशोधन में सहयोग देकर मुझे कृतार्थ किया है।

7 दिसम्बर गीता जयंती 2000

अनन्त राम गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

।। श्री हरिवंश – चरण – शरणं ।।

रत्नावली – भावानुवाद

मंगलाचरण

दोहा – श्री गुरू संतन चरण रज, सिर धर हिय सों लाय ।
रत्नावलि रूपान्तर, लिखता पद्य बनाय ।। 1 ।।
तुलसी जगत प्रसिद्ध है, राम चरित गुन गाय ।
रत्नावलि की ख्याति त्यों, उन उपदेश सुनाय ।। 2 ।।
"भावुक" रामगोपाल कृत, "रत्नावलि" साकार ।
ताही का ले आश्रय, प्रगट करूं उद्‌गार ।। 3 ।।
तुलसी की गाथा लिखी, सब ही संत महन्त ।
रत्नावलि संघर्ष की, नहि कोउ कथा कहंत ।। 4 ।।
सो "भावुक"के उर–बसी, कछु इक चित्त "अनन्त" ।
ता ही का वर्णन करूं, रीझे भीजें सन्त ।। 5 ।।

प्रथम अध्याय – महेवा ग्राम

दोहा – माता रत्ना मायका, ग्राम महेवा जान ।
राजापुर ससुराल है, तुलसी जन्म स्थान ।। 6 ।।

चौपाई

चित्रकूट सब ही जन जाना । तहँ ते साधन सुलभ बखाना ।।
राजापुर पहुंचौगे जाई । है उस पार महेवा भाई ।।
बीच भाग यमुना बह आई । ब्रह्म जीव विच माया गाई ।।
तँह रत्नावलि केर निवासा । पाठक दीनबन्धु पितु पासा ।।
बिन्देश्वर रहु काका नामा । सोई स्वर्ग गये तज धामा ।।
गंगेश्वर रह भ्रात चचेरा । भाभी शान्ति नाम कह टेरा ।।
घर की मालिक केशर काकी । बाहर दीनबन्धु की झांकी ।।
रक्षा बन्धन निकट बिचारी । बहिन लिवावन मन निरधारी ।।
मिले नहीं घर तुलसी दासा । दो दिन की कह बाहर बासा ।।

दोहा – रतना पितु गृह आ गईं, तुलसी लौटे आय ।
बिन पतनी व्याकुल भये, चले ससुर गृह धाय ।। 7 ।।
मारग चढ़ि यमुना मिली, कैसेहु कीनी पार ।
अर्ध रात्रि का समय था, नहिं खटकाया द्वार ।। 8 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

धर पर चढ़ पतनी ढिंग आए । जिसने ताने दिए सुनाए ।।
लौटे तुरत भये बैरागी । हरि प्रेरित सुमती उर जागी ।।
रतना रही रात भर जगते । मिलन प्रतीक्षा करते करते ।।
सोचत मन, मैं वृथा दुखाये । मिलती उनसे हँस मुस्काये ।।
जान सुभाव शंक मन आई। मिलन कठिन आभाष जनाई ।।
पति पत्नी में यों ही चलता । ताने बाने जीवन पलता ।।
तुम भी तो कह गूढ़ पहेली । मुझ से करते रहे ठिठोली ।।
यदि मैंने कुछ कह ही डाला । जपने लगे राम की माला ।।

दोहा – भाभी बड़ी मजाकिया, चुटकी लेकर बोल ।
जग जाती यदि उस समय, खुलती सारी पोल ।। 9 ।।

चोरी छिपे आय ससुराला । जगता कोई पड़ता पाला ।।
इसीलिये मैने कह डाला । बुरा मान मुझको तज डाला ।।
अब मुझसे क्या लोग कहेंगे । भगा दिया पति सभी हँसेंगे ।।
काकी भाभी भी डाटेंगी । पिता सोच कहँ तक आंकेंगी ।।
कब से खड़ी द्वार मन आई। खोजूं कहां अँधेरी छाई ।।
घन छाये हैं चारो ओरी । हवा चल रही दे झक झोरी ।।
बिजली चमक देख लूं दूरी । नजर न आवत है मजबूरी ।।
रात जान नहि टेर लगाऊँ । मन की व्यथा किसे बतलाऊँ ।।

दोहा – हाय बाबरी मति भई, दिया तुम्हे उपदेश ।
पतनी गुरु नहिं बन सके, बिन गुरु ज्ञान न लेश ।। 10 ।।

क्या क्या बात न कहती नारी। सुन कर पुरुष न तजते प्यारी ।।
दो दिन को बस मैके आई । वापिस बहीं पहुंचती जाई ।।
माना प्यार आप अति करते। विरह न दो दिन का सह सकते ।।
निकली बात तीर की नाईं । चुभी हृदय चल दिये गुसांई ।।
गहरी निद्रा में रहि सोई । स्वप्न देख आनंदित होई ।।
आहट पा एका इक चौंकी । निरख सामने तासे भोंकी ।।
हाड़ मांस हित इतनी प्रीती । रटते राम कही यह रीती ।।
तो उद्धार तुम्हारा होता । ये ही मान लगाया गोता ।।

दोहा – प्रात काल अब होत है, आओ स्वामी वेग ।
हँसी ठिठोली बीत गइ, करौ मिलन के नेग ।। 11 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जानत हौं तुम हठी सुभाऊ । ठान लेत मन मान न काऊ ।।
थी मैके से कब की आई । पर जाने की राह न पाई ।।
कूकर हू इक घाट न साधै । औरत जाति कहाँ तक बाँधै ।।
काकी याद सताबै मोई । आव लिवावन भाई सोई ।।
तुम हू बादा दो दिन कीना । लौट पड़े क्या बात प्रवीना ।।
दो दिन बाद अगर तुम आते । तो यह अवसर ही ना पाते ।।
अब तो चिड़ियां भी चहचानी । सत्वर लौट पड़ौ हे ज्ञानी ।।
समझ नहीं मेरे यह आता । हठ योगी का रूप दिखाता ।।

दोहा – दृढ़ संकल्पित व्यक्ति ही, सारे काम बनाय ।
ता ही के बल जगत की, प्रभुता रही लखाय ।। 12 ।।

भये भोर खवास इक आयौ । पालागन कर सीस नवायो ।।
दीनबन्धु पाठक आसीसा । सुखी रखें तुमको जगदीसा ।।
बड़े सबेरे क्यों चल आये । बोला रात दृश्य इक पाये ।।
लग रहे दस्त गयौ मैदाना । देखत रातै लगा भयाना ।।
लखा आदमी तुम गृह पासा । भूत प्रेत का ज्यों हो बासा ।।
घर भीतर तुम देखो जाई । चोर मोर कोउ धसौं न आई ।।
मुगली राज्य प्रबन्ध न नीका । केवल करन बढ़ावन सीखा ।।
यह कह निज घरको चलदीना । पाठक जी गृह शोधन कीना ।।

दोहा – वैजू कह मुझसे गया, कोउ आदमी रात ।
गृह पीछे अपने रहा, देखो सब कुशलात ।। 13 ।।

यह कहते रतना ढ़िंग आये । रतना खड़ी खड़ी पछताये ।।
कहती काकी बात कहा है । क्यों उदास मन आज हुआ है ।।
वे आये थे पुनः चले गये । पूछा तुलसी क्या क्या कह गये ।।
रोका क्यों नहिं बात कहा थी । चोरी छुपे जरूरत क्या थी ।।
ऐसा ढीट नजर नहिं आता । जो पतनी पीछे लग जाता ।।
दीनबन्धु पाठक तब बोले । पौधा नरम संभालो हौले ।।
सुन हक्के बक्के घर वाले । आई भाभी होश संभाले ।।
कहने लगी कहा क्या तुमने । बोली उपदेसा है हमने ।।

दोहा – ननदी भाभी बात सुन, भ्राता जी गये आय ।
जो मैं ऐसा जानता, लाता नहीं लिवाय ।। 14 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बोली शांति कहीं का वानी । करती उनसे प्यार सयानी ।।
यह सुन रतना उर भर आया । रोने लगी चैन नहिं पाया ।।
हिलकी ले ले भरै उसांसें । भई मूर्छित चलती सांसें ।।
बहुत देर में रतना बोली । इतनी कही न करी ठिठोली ।।
हाड़ मांस हित व्याकुल जितने । कहीं राम प्रति होते इतने ।।
तो उद्धार तुम्हारा होता । यही बात बन गई सरौंता ।।
सुन शान्ती बोली मृदु बाता । यह तो नारि पुरूष का नाता ।।
यहि सुन रूठ गये गोसांई । चिन्ता मत कर लौटहिं आईं ।।

दोहा – एकहि दोई दिवस में, लौट आयँ महाराज ।
रोनाधोना छोड़ कर, धर धीरज कर काज ।। 15 ।।

आवें जभी लौट महराजा । नाक रगड़वा लऊँ करसाजा ।।
बन विद्वान वे घर घर डोलें । बात न तिरिया की मन तौलें ।।
औरत रखना खेल नहीं है । हाथी जैसा मेल कही है ।।
अब गृह लौटन की कर आसा । ज्यों जहाज पंछी कर बासा ।।
धर धीरज गृह काज संवारौं । खोज खबर का तांता डारौं ।।
रत्नावलि मन यही समानी । कब आयें वे पन्डित ज्ञानी ।।
जब हम दोनों चलत विवादा । नास्तिक खण्ड ईश प्रतिपादा ।।
समझे सत्य, यही हम जानी । मेरे निकट बनत अज्ञानी ।।

दोहा – हाड़ मांस से प्रीति कर, जान सके जग झूंठ ।
ऐसा को, तलवार दो, धरै म्यान इक जूट ।। 16 ।।

मैं ये तर्क सोच रह जाती । सत्ता ईश न निश्चय पाती ।।
मनुष जन्म संस्कार अधीना । त्यों ही गुण संगत लव लीना ।।
जा समाज पांडित्य दिखाबैं । घर भीतर सब बात भुलाबैं ।।
कथनी करनी अन्तर होई । परख पारखी लेबें सोई ।।
त्याग तपस्या बातें करते । नहीं आचरण में अनुसरते ।।
घर भीतर माया में फसते । ग्रन्थन ज्ञान ताक में रखते ।।
सब पांडित्य रखा रह जाता । लोभ वासना मन भरमाता ।।
देख चरित नफरत हो आती । घंटों डूब सोच में जाती ।।

दोहा – देख विचारो आप ही, कहा सो सब कुछ सत्य ।
कहते रतने तुम बिना, लगता कहीं न चित्य ।। 17 ।।

-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

पूजा करता तुम दिख जाती । भजन करूं तो नहीं भुलाती ।।
ऐसी पूजा रही तुम्हारी । मुझको डाल दिया भ्रम भारी ।।
मेरी बुद्धि भ्रमित कर डाली । समझें हम तुमको संसारी ।।
ईश्वर कहीं नहीं है कोई । केवल मन कल्पित पथ सोई ।।
काकी केशर बाई आई । बोली भैया खोजन जाई ।।
करौ कलेवा धीरज धारौ । आवत होगो खोज दुलारौ ।।
कुछ दिन बाद पता यह पाया । साधू उनको बनना भाया ।।
सुन रतना चिंतित हुई भारी । साधु व्याधि क्या होती नारी ।।

दोहा – नारी का स्तर घटा, कहें नर्क का द्वार ।
पतनी धरनी एक सम, उपजावै संसार ।। 18 ।।

एक बार यह बहस छिड़ी थी । मैंने तो तब साफ कही थी ।।
रूप बाहरी नारी देखा । अंतर मन का किया न लेखा ।।
नारी अथवा नर हो स्वामी । सबका मालिक अन्तर्यामी ।।
पुरूष भले बाधा कर माने । शक्ति बिना शिव–शव सम जाने ।।
रीति पुरातन यह चल आई । रिषि मुनि सबके पतनी पाई ।।
नारी के संग करी तपस्या । वेद रिचा लिख दीनी शिक्षा ।।
क्या उनका कल्याण न भयेऊ । नवपुराण कहं से गढ़ लयेऊ ।।
घर ही रहत साधना करते । तो क्या वो भव से नहिं तरते ।।

दोहा – बाबा बन भागे फिरैं, भीख मांगवे खात ।
नवयुग की यह दैन है, तिरिया तज भज जात ।। 19 ।।

समय साथ सब काम करावै । नीति न्याय ये ही सिखलावै ।।
यवनी शासन पाप बढ़ावै । धर्म कर्म सब तुरत नसावै ।।
कैसे में समझाऊं तुमको । विरह व्यथा कितनी है हमको ।।
घर ही रह कर भजन करोगे । तो सब साधन सुक्ख भरोगे ।।
आगे पीढ़ी शिक्षा लेगी । और दोष नहिं तुमको देगी ।।
लेकिन आप हठी जो ठहरे । मन मौजी बन जग में विहरे ।।
मेरी बात तीर सी लागी । तो चल दीने बन वैरागी ।।
यदी सोच मन में करते हो । घर वापस आने डरते हो ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – तो मैं कहती सत्य कर, दू नहिं मानस ठेस ।
जैसा तुम जो कहोगे, वैसा करूं हमेश ।। 20 ।।

द्वितीय अध्याय – तारापति

दोहा – कितने दिन के गये तुम, सुधि नहिं लीनी नाथ ।
मेरी तो जैसी रही, तारा की भी साथ ।। 1 ।।

नहिं तुमसा निर्मोही पेखा । बच्चे का भी सुख नहिं देखा ।।
नारी जीवन – बेल समाना । बिना सहारे नहिं चढ़ पाना ।।
जीवन दुरलभ प्रकृति बनाया । कहैं विचित्र दैव की माया ।।
बचपन मात पिता की छाया । तरूणाई में पती रखाया ।।
वृद्ध अवस्था पुत्र सहारे । जीवन काट रही विपदारे ।।
इतना भी साहस नहिं रखती । अपना पेट आप भर सकती ।।
पुत्रहु सोच भये निश्चिंता । सुत को पालूं कैसे कंता ।।
कितनी खोज पिता करवाई । नहिं कछु पता तुम्हरा पाई ।।

दोहा – दरवाजे के निकट ही, खड़ी देख आकाश ।
तारे जगमग की चमक, खोजत ताहि प्रकाश ।। 2 ।।

सभी लोग थे घर के सोये । मन की व्यथा मनहि में गोये ।।
नींद न आई तो धुन छाई । बना गीत सो देऊँ सुनाई ।।
बाढ़ जभी नद में है आती । चले सभी मर्यादा ढाती ।।
उमड़ाती घुमड़ाती बहती । त्यों ही विषय – वासना बढ़ती ।।
ऐसे ही स्वामी तुम आये । थी मैके मुझको नहिं भाये ।।
निकल पड़े तब मेरे वचना । यही भांति होते हरि लगना ।।
रिषियों की सन्तान कहाते । हाड़ मांस हित फिर क्यों धाते ।।
क्या विश्वास तोलने आये । गये हार इसलिये भगाये ।।
मिटा अनंग बदला लेने को । मुझ अवला को दुख देने को ।।

दोहा – सुन धुनि शान्ती जग पड़ी, छिपकर सुना जु गीत ।
इतने में हुइ शंख ध्वनि, प्रात काल मन चीत ।। 3 ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

ननदी का तुम बावरि भई । आये भाई रात जब गई ।।
अब तो बने जाय बैरागी । तुमरी शिक्षा के भये भागी ।।
बोली रतना धैर्य धरूंगी । साहस से सब कार्य करूंगी ।।
पुरूष हार जाता जब जग से । बाबा ही बन पाता तब से ।।
पर विराग तो उसको कहते बदल जाय यह मन भी जग ते ।।
पलटे भेष काम नहिं बन्ता । सब कुछ जाने जगत नियन्ता ।।
सुन कर शान्ति चाकित भइ बानी । रानी कहती सत्य बखानी ।।
युग युग की है बात पुरानी । अब तो बदल गये सब प्रानी ।।

दोहा – आजकाल ऐसा करे, सो मूरख कहलाय ।
कर्तव्यों से हो विमुख, भार समाज उठाय ।। 4 ।।

पर आश्रित कह, करें बुराई । स्वावलम्बि को मिले बड़ाई ।।
यों कह भाभी ने समझाया । क्या समाज से नाता गाया ।।
तुम भी उन जैसी बन जाओ । क्यों जीवन को व्यर्थ गँवाओ ।।
बोली रतना बात विचारी । नारी व्यथा पुरूष से न्यारी ।।
घर से निकले पुरूष महाना । नारी निकले कुलटा जाना ।।
भाभी एक बात मन आवै । कहूं जु तूं मन बुरा न लावै ।।
तुम्हरी बातें नीकी लागें । कहो कहो लज्जा भय त्यागें ।।
कहीं तुम्हें मैं भार न लागी । अपनी विपदा की मैं भागी ।।

दोहा – हाय हाय क्या कह रहीं, मैं तो की तप बात ।
रत्नावलि सुन समझ लई, भाभी की उर घात ।। 5 ।।

आप न समझीं मुझको भाभी । चाहों समझन कहौ सुभागी ।।
लघु वय जान बात कछु कीन्ही । तरूणाई पति बिन दुख दीन्ही। ।
धर्म अधर्म जान विद्वाना । हम तो सूधी राह सुजाना ।।
फिर भी चेतावनि अति नीकी । सीख सुने लागै नहिं फीकी ।।
परी सुनाई पितु की वानी । बेटी पूजा हित जल आनी ।।
अभी लाइ यह उत्तर दीना । नीचे उतर आइ तब जीना ।।
घट उठाय यमुना चल दीनी । लाई जल भर पूजा कीनी ।।
ग्राम महेवा रह इस पारा । राजापुर रह परली पारा ।।
पाठक जी नित आते जाते । केवट बाट जोहते पाते ।

दोहा – प्रात काल का नियम था, आते जाते संत ।
मंदिर श्रीहनुमान के, जिनकी शक्ति अनंत ।। 6 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दरसन परसन करके पूजा । आते लौट कार्य नहिं दूजा ।।
आय प्रश्न रत्ना से कीना । पहुँचा कहँतक पाठ प्रवीना ।।
कहा यही श्री सीता माता । बाल्मीकि आश्रम गई ताता ।।
जो शंका तुम हम से करतीं । भई दूर कै रही उलझती ।।
अज्ञानी के छुद्र विचारा । प्रगटें ज्ञान, करें उजियारा ।।
अब भी दोष राम को दोगी । जीवन भर कोइ रहा निरोगी ।।
घटनायें जो जो घट जातीं । मन चिन्तन की राह बतातीं ।।
अग्नि परीक्षा की कठिनाई । बार बार शंका उर लाई ।।

दोहा – धर्म कर्म व्रत नेम जे, राजनीति के भाग ।
बने लोक हित के लिये, त्यों सीता का त्याग ।। 7 ।।

जब तक भाभी मुन्ना लाई । पूजा गृह आगे बैठाई ।।
चल घुटनों बल अन्दर जाई । मुर्ति उठावन हाथ चलरई ।।
दौड़े नाना लिया उठाई । बोले तुझे क्या चिन्ता भाई ।।
यह तारापति बना सुखी रह । पिता डोलता रहे जहाँ चह ।।
वह अपने मन की कर डारे । को पहाड़ से सिर को मारे ।।
रतना वैसे ही कम बोले । तुलसी गये तब से मुँह खोले ।।
वोली हम क्यों सिर को पटकें । असमय छोड़ा वो ही भटकें ।।
अपने लिये भजन जो करता । पर दुख को चित में नहिं धरता ।।

दोहा – ऐसों की क्या गति बने, जाने वो भगवान ।
परहित लेकर ही बना, जग का सकल विधान ।। 8 ।।

कहती बात ठीक तुम बेटी । पर मम जान परै यह हेटी ।।
जग आसक्ति राम से दूरी । पलटे बने संजीवन मूरी ।।
सोइ राम से जाय मिलाबे । यह जग सिया राम बन जाबे ।।
तपका फल नहिं निज उद्धारा । हो समाज हित अधिक विचारा ।।
जो समाज सुख दाइ बनाबें । तो दौड़े प्रभुता पर आवैं ।।
करै तपस्या पर हित भाई । जो सबको होवे सुख दाई ।।
जो निज हेत तपस्या करते । वे शोषक समाज के बनते ।।
तारापति ले बाहर आईं । पाठक डूब गये पंडिताई ।।

-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – घटनायें नव चेतना, करतीं सदा प्रदान ।
सोच मथन से निकलता, कोई नया विधान ।। 9 ।।
पिता पुत्रि संवाद से, साहस बढ़ा महान ।
रत्नावली हारी नहीं, पुरूषा रथ रख ध्यान ।। 10 ।।

तृतीय – अध्याय – कबीर मण्डल

दोहा – सुना जभी दामाद ने, लीना पूर्ण विराग ।
पाठक हू वैरागि बन, रहे भक्ति में पाग ।। 1 ।।

पतनी पहले स्वर्ग सिधारी । पुत्र नहीं था थी लाचारी ।।
फिर भी पांच सदस थे घर में । केसर–सुत–वधु बिटिया स्वयं मे ।।
भार नहीं था कम सिर इनके । पंडिताइ फिर पीछे जिनके ।।
घर छोड़े से बात न बनती । रतना इसे ठीक नहिं गिनती ।।
तर्क वितर्कन रहे भुलाने । हे प्रभु कैसे लगूं ठिकाने ।।
पुरा परौसी कविरा पंती । बैठक नित्य रात को जमती ।।
गाता एक सभी दुहरावें । बारी बारी नम्बर लावें ।।
सुन सुन रतना कंठस करती । बचपन से जिज्ञासा धरती ।।

दोहा – पिता पुत्रि का परस्पर, चलता रह संवाद ।
पाठक मत विपरीत था बढ़ता नित्य विवाद ।। 2 ।।
कहती रत्ना पक्ष ले, रहे गृहस्थ कवीर ।
ज्ञान ध्यान में कम नहीं, थे सम्पूर्ण फकीर ।। 3 ।।

पाठक जी नित मंदिर जाते । कभी कभा देरी तक आते ।।
संध्या को बैठक जम जाती । दोई एक पुराने साथी ।।
चलती बातें देस धरम की । कभी गृहस्थी भार, करम की ।।
कही कन्हैया समय की बाता । मुगल काल मुझको नहिं भाता ।।
वातावरण मुसलिमी छाई । हिन्दू धर्महि देत नसाई ।।
आगे चल क्या होगा भाई । सभी मुसलमाँ बन हैं जाई ।।
पद लोलुप जा मुसलिम बनते । हिन्दू व्याह बेटियां करते ।।
कोई ऐसा प्रगटे आई । हिन्दू धरमहि लेय बचाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – कविरा तो ऐसी कही, जैसी कहे न कोय ।
सर्गुण मत खंडन करे, ब्रह्म ज्ञानि बन सोय ।। 4 ।।

कविरा नाम सुनत चिढ़ आवै । पाठक जी को तनक न भावै ।।
आगे कहें जाति नहिं जाकी । विधवा के प्रगटौ एकाकी ।।
धर्म कर्म सब दिये नसाई । ज्ञानीपन की धाक जमाई ।।
ज्ञानी क्या रोटी नहिं खाते । उसकी विधि भी शास्त्र बताते ।।
उनका ज्ञान वही ही जाने । को सुन समझे बने अयाने ।।
चाहे जिसकी वे खाजाते । कोई ग्लानि हृदय नहिं लाते ।।
मुसलमान तो सब ग्रह लेते । हिन्दू क्यों पीछे लग लेते ।।
सुन सब श्रोता रहे चुपाने । उत्तर दैन न मन में ठाने ।।

दोहा – आजकाल शासन भयो, कर्मचारि आधीन ।
जो वह कहदें सच वही, छान बीन को कीन ।। 5 ।।

रतना निसिदिन मन में गुनती । कहा कहा कहती अरू सुनती ।।
समय फेर बदली सब प्रकृती । मन भी बदल चाहता विकृती ।।
पहले जैसे लोग न दिखते । ग्रसित वासना सबही लगते ।।
ऐसों को उपदेसे कोई । उल्टा क्रोध जताते सोई ।।
ये ही काम प्रेम में बदले । तो मन हो जाते हैं उजले ।।
श्रष्टि सभी सौन्दर्य सजाई । निरखत हरषे प्रभु प्रभुताई ।।

दोहा – काम तो केवल श्रष्टि हित, विधि की अनुपम दैन ।
धर्म कर्म से रह विलग, पतित पतन का ऐन ।। 6 ।।

होय प्यार से काम न जोई । वही ताड़ना से झठ होई ।।
रहे वासना सबै डुबाती । ठोकर खाकर सोई जगातीं ।।
करै याद यौवन की घड़ियां । चलती मन मानों फुल झड़ियां ।।
प्यार भावना उर जग जातीं । अश्रु वहाकर रैन वितातीं ।।
सुमिरन करतीं रहती बातें । जो जो होती प्यार के नाते ।।
इसी भावना खोई रहती । नाजाने वह क्या क्या कहती ।।
भावुक की भावना निराली । जो जो प्रभु ने जिस दे डाली ।।
जीवन त्यों ही अपना जीते । वो ही अगला कार्य संजोते ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – यों ही दिन कटते रहैं, करते हृदय विचार ।
एकाकी जीवन कठिन, प्रभू लगावै पार ।। 7 ।।

ग्राम महेवा सब कोई बसते । घर खपरैलों के रहँ ससते ।।
पाठक के गृह अधिक बताये। एक दु मंजिल भवन सुहाये ।।
पर कबीर मंडल था नामी । सभी भजन गाते अनुगामी ।।
देर रात कल्यान जु आवै । तासों पतनी यों भर्रावै ।।
दिन भर करती मैं मजदूरी । होती शाम नींद लूँ पूरी ।।
अबही आँख लगी है मेरी । कै तुम आय लगाई टेरी ।।
समझ न आते कैसे भजना । जिनसे हिन्दू धरम बिटमना ।।
रतना कितनी बातैं करती । सुन कर तुलसी बन गये भगती ।।

दोहा – बोला रतना दोष नहिं, बुरा मान गये भाज ।
सुनकर लाड़ो चुप रही, अपने मन को माज ।। 8 ।।

चतुर्थ अध्याय – पण्डित सीताराम

दोहा – पण्डित सीताराम जी, चौबे जी कहलायँ ।
धोती वाले पंडित हू, कह कर उन्हैं बुलायँ ।। 1 ।।

धोती ढंग विचित्र पहनते । आधी ओढ़ें आधी कछते ।।
शंकर जी के पूरे भक्ता । जजमानन में जिनकी सत्ता ।।
आस पास के सब जजमाना। कुसुवन प्रोहित कर जिन माना ।।
अधिक लालची रहे सुभाऊ । जजमानी से करै निभाऊ ।।
इनकी जजमानी ही खेती । घूमत नित धन पाने हेती ।।
कबहूं लौट चार दिन आवैं । कबहूं आठक दिवस लगावैं ।।
अबकी पंडित जी घर आये । बांध पुटरिया सामाँ लाये ।।
निरख पंडितानी मुसकाई । देखन लागी भेंट विदाई ।।

दोहा – वेदबती के नाम से, पूरे गाँव प्रसिद्ध ।
अपनो काम बनायबे, चतुराई में सिद्ध ।। 2 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

धोती निरख जनानी फूली । खूब लाय कर आज वसूली ।।
यह धोती तो में पहनूंगी । मन में बसी काहु नहिं दूंगी ।।
पंडित देख मनहि मुस्कावैं । बार बार चित उन तन लावैं ।।
चौबे हू सब मन की जाने । आज कृपा की कोर निभाने ।।
एक दोइ दिन स्थिति ऐसी । पुन बड़ बड़ वहि नित प्रति जैसी ।।
पंडित जी मजबूरी जाते । उरका क्रोध न कह ही पाते ।।
कभी याद तुलसी की आती । दें उलाहना, तबडर जाती ।।
खबर लगी पुत्री जब आई । नाम रहौ कोशिल्या बाई ।।

दोहा — चौबे जी के प्रवचन, जजमानी संबंध ।
बीते सोइ सुनात हैं,कह प्रसंग अनुबंध ।। 3 ।।

हैं अब भये चतुर सब लोगा । बन कंजूस धर्म के ढ़ोंगा ।।
क्या क्या कह उनको समझाता । तब ही उनका मन भर पाता ।।
ठाकुर कह उन पद बैठारें । आशिष दै शुभ वचन उचारें ।।
उनके दुख की बातें सुनता । वाधा हरण युक्ति भी गुनता ।।
वो भी सब घर ग्रहा दिखाते । दान दक्षिणा तब ले पाते ।।
सुन बोलीं तबही पंडितानी । यह तो रीती रही पुरानी ।।
इससे लोग दक्षिणा देते । कर्ज नहीं जो तुम ले लेते ।।
यह सुन पंडितजी भर्राये । तू क्या जाने बात बनाये ।।

दोहा — वेदवती वोली तबै, सब जानूं महाराज ।
वेवकूफ लोगन बना, ठग लाते हो साज ।। 4 ।।

ये तो हैं धन्धे की बातें । खोजो घर वर विटिया नातें ।।
विटिया भई सयानी तुमरी । रतना ढ़िगं जाती नित बिगरी ।।
जो कछु कहौं तो मुझसे इठती । सुने शिकायत चल भइ उठती ।।
वेद वती की वेद रिचाऐं । भई शुरू वर पता लगायें ।।
पंडित कहें कई घर देखे । नहीं कुंडली मिलती लेखे ।।
अपनी विटिया मंगल लाई । लड़का मिले मंगली भाई ।।
वेदवती कह ग्रहा न जानूं । इसी वर्ष व्याह को ठानूं ।।
कह पंडित पाठक अज्ञानी । चमक दमक के धोखे आनी ।।

-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – मिला न जानें कुंडली, बांधे झूठी शान ।
दुनियां का ठेका लिया, कर्म धर्म अज्ञान।। 5 ।।

काटत बात वेदवति बोली। काम अधिक आता उन ओली ।।
सुन चौबे क्रोधित है बोले । काम धाम की महिमा तौले ।।
कब से भये सुखी पाठक जी । पुत्री एक सोउ नाटक जी ।।
भ्रात पुत्र गंगेश्वर नामा । मुंह देखे करते सब कामा ।।
वेदवती कहि क्या जग दुर्लभ । कौशिल्या विवाह हो सुरलभ ।।
सुन पंडितजी झट से बोले । विना मिलें ग्रह जोखम को ले।।

दोहा – वैजू ने आते सुना, पंडित का संवाद ।
कर पालागन वैठ गऔ, लीनो आशिरबाद ।। 6 ।।

बोला वह सच ही सब बाता । मैं कहता तो नहीं सुहाता ।।
जिन बातों को जो नहिं जाने । टांग अड़ाये मिलते ताने ।।
दशा बिगड़ गई यों विप्रन की । धाक जमाय बात कह मन की ।।
पूत पांव पलना दिख जाते । जनमत मात पिता मर जाते ।।
तब भविष्य क्यों उज़्जवल होई । शास्त्र वचन सब सांचे सोई ।।
जानन हित तुलसी जीवन की । बात चलाई जजमानन की ।।
चौबे समझ लई सब मन की । कथा कही तुलसी जीवन की ।।
तुलसी नरहरि गुरु का चेला । घूमा फिरा देखता मेला ।।

दोहा – विद्वता पर रीझ कर, झट कर दीना व्याह ।
आगा पीछा गुना नहिं, अब पीछे पछताह ।। 7 ।।

एक बात औरौ सुन पाई । झट से बोला बैजू नाई ।।
जौन रात तुलसी यहँ आये । बाढ़ चढ़ी यमुना अधिकाये ।।
मुर्दा एक बहत चल आवै । ताहि पकर पार हो जावै ।।
पंडित कही कहां सुन पाई । जिन देखा तिन मोय सुनाई ।।
सूना घाट कवहुं नहिं रहही । पंडित मानी सत्य बतकही ।।
ढ़िंग बैठी पंडितानी बोली । रतना मां तो हौंसी डोली ।।
खूब बड़ाई करती उनकी । मोर दमाद खान है गुनकी ।।
अब क्यों फुसक फुसक कर रोती । पहले गुनती क्यों यह होती ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – बैजू भी सुन बात को, कहन लगा निज बात ।
मन मिलता उससे नहीं, कोई बात छुपात ।। 8 ।।

जिस दिन की यह बात रहावै । ता दिन पेट मरोरी आवै ।।
आधी रात गयो मैदाना। चमकत बिजली पुरुष दिखाना ।।
भूत प्रेत चोर कोउ जानी । झटपट लै चल दीनो पानी ।।
पाठक के घर पीछे देखा । रस्सी से चढ़ते जन पेखा ।।
पंडितानि सुन कीनी शंका । रस्सी कौन डाल गयो बंका ।।
हो सकता है सांप लटकता । चढ़ गया हो यों पाकर रस्ता ।।
यह सुन पंडितानि जी चाली । पुरा परोसिन कानों डाली ।।
कर प्रचार घर वापस आई । वामन को वामन नहिं भाई ।।

दोहा – नारी जाति स्वभाव यह, सुन अचरज की बात ।
एक दूसरे से कहें, घर घर फैलत जात ।। 9 ।।

पंचम अध्याय – गंगेश्वर

दोहा – नित प्रति की है जो व्यथा, सहत सहत सह जाय ।
आत्म शक्ति विश्वास की, आस्था त्योंहि बढ़ाय ।। 1 ।।

त्यों पाठक परिवारहिं जानों । सबही चिन्ता रहै भुलानो ।।
रतनहु दुख परिवर्तन कीना । पुत्र प्रेम में अब मन दीना ।।
केशरकाकी सुत व्यवहारा । रहती क्षुब्ध सु करत विचारा ।।
बहुत दिवस सोचत ही बीते । बैठक आज भई अपु हीते ।।
पाठक जी बैठे निज पौरी । केशर भी आई उन ओरी ।।
रतना तारापति ले आई । गंगेश्वर भी आ ठहराई ।।
बहू शान्ती कौने चिपकी । बात सबन की सुनती दुबकी ।।
बोली केशर तुलसी की छवि । व्याहन आये ता दिन की फवि ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – भूलत नाहिं भुलाय हू, वह बारात की शान ।
ऐसी नहिं काहू लखी, जैसी उनकी आन ।। 2 ।।

सुनते ही पाठक जी बोले । गणपति पिता कृपा कौं तोले ।।
उनकी बात न तुलसी टारैं । यों संबंध भयो निर्धारैं ।।
तब ही गंगेश्वर यों बोला । बने फिरें विद्वान अमोला ।।
अक्कल दो कौड़ी की नाहीं । साधु बने, क्यों कन्या व्याही ।।
तब ही उस दिन की सुधि आई । जा दिन रतनहि गयो लिवाई ।।
काका गये लिवावन बहुऐ । आगई होगी अब घर चलिये ।।
जीजा जी भी घर पर नांई । तासौं झटपट चलौ लिवाई ।।
बना बात कीनी चतुराई । सोचत सोच समझ है आई ।।

दोहा – कही बात यों बनाकर, काका जी बीमार ।
रतना बिन सोचे चली, यह अनर्थ आधार ।। 3 ।।

पूछा मां क्या सोच रहा है । मन निज गलती खोज रहा है ।।
रतना क्या ऐसा कह डाला । जिससे पकड़ लई मृगछाला ।।
वे ज्ञानी मानी नहिं होंगे । ढोंगीं बने डोलते होंगे ।।
सुनकर पाठक जी भर्राये । बात पलट तब यों समझाये ।।
वे थे नहीं पुरुष संसारी । जो बनते मर्यादा धारी ।।
केशरवाई तबयों बोली । उसने कथा सार की तौली ।।
आनंदमय कहि छनती होगी । हम ही सब चिन्ता के भोगी ।।
सुन गंगेश्वर क्रोध उड़ेला । रचें "बुद्ध" सम धर्म नवेला ।।

दोहा – पाठक जी कहने लगे, गंगेश्वर बाचाल ।
इक दिन तुलसी होयगा, संत शिरोमणि माल ।। 4 ।।

यों कह पिता गये चौपाला । सबने निज निज काज संभाला ।।
भाई बहिन दोइ रहे बेठें । बोला गंगेश्वर मन ऐंठे ।।
रतना कबिरा वाली बातें । नहिं काका के मन को भातें ।।
यही सोच उन शादी कीनी । रतना बन जायें रस भीनी ।।
रतना कही प्रेम के नाते। निज विचार नहिं थोपे जाते ।।
वैचारिक टकराहट होती । वह आगे की बात संजोती ।।
बोला तो अब रहो प्रेम से । निज विचार नित गुनो चैन से ।।
तो क्या नारि विचार न राखै । सत्य बात हू मुख नहिं भाखे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – नहिं समाज का धर्म ये नहिं कुटुम्ब की रीति ।
है इक पक्षी न्याय यह, कैसे बाढ़े प्रीति ।। 5 ।।

मां, गंगेय अवाज लगाई । काका बुला लाव तुम जाई ।।
जब तक वे भोजन नहिं पाबैं । भूखी रह वहु नियम निभावैं ।।
अब निकले, कब लौटें आवैं । आदत नहीं बुढ़ापे जावैं ।।
गंगेश्वर यों गया बुलाने । मन ही मन निज दोषी माने ।।
उस दिन नहीं लिवाने जाता । तो यह जोग नहीं बन पाता ।।
रतना मन मन ढूंढ़न जाती । केशर सोच सोच रह जाती ।।
रमता जोगी बहता पानी । इनकी गति काहू नहिं जानी ।।

दोहा – पाठक हू नित सोचते, रहै जवानी रोष।
देर लगे नो रहत है, धीरे पावै तोश ।। 6 ।।

यही जोश सब काम करावै । तोड़े जोड़े जगह बनावै ।।
पुनर्गठन कभी कर डाले । जो चाहे सो जोश संभाले ।।
जो जल वेग भरे स्थाना । मेंड़ तोड़ मर्याद नसाना ।।
तीव्र प्रवाह हो झरना जैसा । काट कगार बढ़त है वैसा ।।
वैसे बात अजबसी लागै । वासना से मर्यादा भागे ।।
नीति न्याय के रोड़े ड़ाले । तोवासना विराग संभाले ।।
अब मरयादा तड़प रही है । कैसी अद्भुत घुटन छई है ।।
अब मैं दोष देऊँ नहिं काऊ । जो कछु भयो सु मोर सुभाऊ ।।

दोहा – मै ने तो यों मन समझ, मेल मिलायो सूझ ।
भक्ति ज्ञान दोउ मिल रहैं, भई उल्टी ही बूझ ।। 7 ।।
कबिरा कांसे प्रगट भौ, कर दओ मटिया मैंट ।
कछू बुराई करत हैं, कछू करत हैं भैंट ।। 8 ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

षष्ठं अध्याय – गणपती

दोहा – पुत्र सहारा बनत है, पति वियोग के बाद ।
सोई रतना आस कर, तज दिये सकल विषाद ।। 1 ।

तारापति अब वोलन लागा । सभी खिलाने लेते भागा ।।
नाना लिये ग्राम में डोलें । रतना मन की आशा तौलें ।।
रतना सोचे किरिया सारी । होगा निज गृह का अधिकारी ।।
छोटा है सो सभी खिलाते । भइया भाभी प्यार जताते ।।
कल के दिन की किसने जानी । क्या व्यवहार करें ये प्रानी ।।
फिर मैं भार बनू क्यों इनपर । राह निकालूं कुछ चिन्तन कर ।।
अपने पैरों चलना चहिये। यही रास्ता जग अपनइये ।।
आइ दिवाली निकट सुहाई । करैं सभी सफाई पुताई ।।

दोहा – कई खबरें हैं आचुकीं, गणपति की मम पास ।
मैया आबें यहां पर, होगें सभी सुपास ।। 2 ।।

रह उधेड़बुन करती रतना । दो सखियाँ आई संलग्ना ।।
सो कोसल्या और सुगंधा । पच गुट्टे खेलन अनुबंधा ।।
बोली बाजी चढ़ी पुरानी । ताहि उतारन मनमें ठानी ।।
अब तक उतर न पाई तुमसे । अब क्या उवर पाओगी हमसे ।।
ले चुटकी, कौसल्या बोली । हार मान जीजा मति डोली ।।
कही सुगंधा ऐसी वानी । उनको क्यों घसीटती रानी ।।
वे तो राम भजन लवलीना । उनने कहा तुम्हारा छीना ।।
कितने दिन भये तुमको आये । कबहूँ लेखा गये लगाये ।।

दोहा – बोली खबरैं आ रहीं, गणपति जी के हाथ ।
रहा शिष्य महाराज का, वो ही देगा साथ ।। 3 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

करते मना पिता जब सुनते । उनको चिंता होगी गुनते ।।
टूटा घर देखेगा आई । तो सुधार की चिंता छाई ।।
सब गई समझ सहेली बातें । रतना की जाने की घातें ।।
बोलीं अब जब गणपति आवै । जाव संग मेरे मन भावै।।
रतना बोली ठीक कहा है । नारी दोनो ओर निवाहै ।।
कही सुगंधा राय जनाये । अब तो बहुत उपद्रव छाये ।।
मुगलों का यह शासन आई । जहां तहां व्यभिचारी छाई ।।
ज्वान अवस्था रहे तुम्हारी । अपनी इज्जत आप संभारी ।।

दोहा – यों कह गई सहेंलियां, अपने घर की ओर ।
रतना तारापती से, बातें करती जोर ।। 4 ।।

बेटा चलौ घरै अब चलियें । दुख सुख वहीं जाय कर सहियें ।।
मरे साँप नहिं लाठी टूटै । बने काज दोउ, यह घर छूटै ।।
गणपति पिता द्वारकादासा । भेजें खबर बुलावन आसा ।।
गणपति गोस्वामी का चेला । रहा घरोवा हेलक मेला ।।
नव दुर्गा चल रहीं आज कल । बना बनाया है मुहूर्त भल ।।
गणपति तवहि लिवाने आया । पाठक जी के मन हू भाया ।।

दोहा – बड़े घरन की रीति यह, आवें समये काम ।
रतना जाने का बना, यों संयोग ललाम ।। 5 ।।

कानों कान बात यों फैली । रतना जाना चहै सहेली ।।
मिला गणपती रतनहि आई । छुये पैर गुरु माता नाई ।।
बोला मैया अब घर चलिये । सुख दुख सबहि वहीं पर सहिये ।।
कहा पिता ने चिंता नाहीं । सब प्रबंध हम नित्य कराहीं ।।
घर भी अपना देखो भालो । अपना कारज स्वयं संभालो ।।
तब तक सभी इकट्ठे होते । तारापति को गणपति लेते ।।
करन लगे सुख दुख की बातें । करी प्रसंशा गुरू के नातें ।।
मैने सुना विरागी भयेऊ । भाग्य लिखी से सो वँध गयऊ ।।

दोहा – बना मता सब का यही, कछु दिन घर रह आय ।
उचित नहिं यद्यपि तऊ, जो कछु दैव कराय ।। 6 ।।
मन मारे पहुँचा दई, गणपति चले लिवाय ।
गये नदी तक भेजने, पहुँचा वापिस आय ।। 7 ।।

-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gr

सप्तम अध्याय – राजापुर

दोहा – राजापुर के घाट पर, जाके लागी नाव ।
बच्चे यों कहने लगे, मैया आगइ गाँव ।। 1 ।।

ऊपर घाट मकान रहावै । सीधे चढ़े शीघ्र पहुंचावै ।।
सब बच्चे सामान लियाये । मैया को घर पहुंचा आये ।।
हरको नाम इक जोगिन रई । आवत जावत मन मिल भई ।।
जनकू जोगी की घरवारी । प्रसव न एकउ भयो विचारी ।।
लेकर राय दूसरी राखी । ताकी इक पुत्री है भाखी ।।
पति निकाल दीनी तब जेठी । तुलसी शरण लइ घर पैठी ।।
स्वाभिमान बस घर नहिं जाई । करै गुजर अपनी जनवाई ।।
झाड़फूक के कामै जाने । सबही गांव ताहि सन्माने ।।

दोहा – जनसेवा नित प्रति करे, यह था उसका काम ।
जो बुलाय तहं जाय के, हरती बाधा ग्राम ।। 2 ।।

सुन कर हरको दौरी आई । मुन्ना ले मन में हरषाई ।।
करूं याद आये कब रतना । आकर भवन संभाले अपना ।।
पग छू कर रतना से बोली । भली आईं निज बाखर खोली ।।
गुरू जी गये नींद नहिं आई । का जाने मन कहा समाई ।।
इससे तो तुमको गुरू करती । दर्शन कर मोदन मन भरती ।।
जो जो सुने सोइ सोइ दौरै । भई भीर रतना के पौरै ।।
भागवती गणपति की माता । कहत भई रतनहि समझाता ।।
आजकाल मानुष लघुबाता। गुनबुन खूब बढ़ावत तांता ।।

दोहा – बहिन वहीदा यों कही, मुझको लगें फकीर ।
लक्षन ऐसे ही रहे, सोइ सत्य भई वीर ।। 3 ।।

रहो चैन से अपने घर मैं । हमसब तो हैं तुम्हरे संग में ।।
दूजी कहन लगी सुन मैया । कुशल वहां पर तुम्हरे भैया ।।
पिता तुम्हारे का मन आई । करवो तीरथ उन मन लाई ।।
बस यह तारापति पल जावै । चिंता मुझको यही सतावै ।।
सुनबोली चिन्ता नहिं आनी । ईश्वर की गति जात न जानी ।।
एक हाथ लेता है वोई । दूजे हाथ देत है सोई ।।
गोस्वामी हनुमत पधराये । निकट पड़ौसी को संभराये ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – सेवा पूजा सोइ करें, श्री हनुमत के धाम ।
चढ़े चढौती ताहिसे, चलता उनका काम ।। 5 ।।

अब मैया राजापुर रहती । आये पुजारी लिये चढ़ौती ।।
बोले रतना याहि संभारौ । देखत बोली हक्क तुम्हारौ ।।
मेरी चिन्ता मत तुम करियो । सेवा कर मेवा ही भरियो ।।
गये पुजारी अपने घर पर । लगी सोचने रतना जीभर ।।
ब्राह्मण पर सोने की झोली । खूब प्रथा पुरखन ने खोली ।।
भीख मांगना अति दुख दाई । स्वाभिमान इससे गिर जाई ।।
उदर पूर्ति हित भिक्षा मांगे । अपनी सभी प्रतिष्ठा त्यागे ।।
इससे बालक क्यों न पढ़ाऊँ । विद्या दान करूं सुख पाऊँ ।।

दोहा – ब्राह्मण का ही काम यह, अति उत्तम निरधार ।
इससे ही हो जायेगा, मेरा बेड़ा पार ।। 6 ।।

अष्टम अध्याय हरको

दोहा – प्रति दिन उठकर सुबह से, करती पूजा पाठ ।
गोस्वामी जी की तरह, वांधा अपना ठाठ ।। 1 ।।

पुन तारापति चर्या करती । धंनियां आकर जल को भरती ।।
हरको फूल चढ़ाने लाती । रतना को भौजी बतलाती ।।
धनियां मजदूरिन ले आई । घर की करन सफाई पुताई ।।
रतना तब उससे यह बोली । पैसा कहां मत करै ठिठोली ।।
अपना काम स्वंय कर लेंगें । धीरे धीरे निपटा लेंगें ।।
हरको धनियां रतना तीनो । काम बांट आपस में लीनो ।।
बकसा एक काठका रहई । बहुत दिनों से जो नहिं खुलई ।।
कई बार हरको कह हारी । मन में सोचत होय दुखारी ।।

दोहा – यदि वे आये लौट कर, तो सोचेगें और ।
ऐसी जल्दी कौन थी, इस पर कीनी गौर ।। 2 ।।
एक दिवस की जीत ही, बनी जनम की हार ।
नारी का पथ प्रदर्शन, करना है अधिकार ।। 3 ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

जो परित्यक्ता नारीं होती । अपना कारज स्वयं संजोती ।।
मुझको ऐसे कारज करना । जिससे लांक्षन लगे कोई ना ।।
कर विचार बकसा को खोला । रखते जिसमें वस्त्र अमोला ।।
हरको को सन्देश सुनाई । इन वस्त्रों को धूप दिखाई ।।
त्रय कालों का भाव बतावै । पिछली बातै ध्यान दिलावैं ।।
जो जो वस्तु सन्दूकै पाई । सो सो छटनी कर विलगाई ।।
थैली एक धरी रह तामें । मुहरें सात रही हैं जामें ।।
इक थैली में दवा दिखानी । ताहू धूप दिखाय सुखानी ।।

दोहा – अब केवल पुस्तक रहीं, तब तक हो गई शाम ।
कल के ऊपर छोड़ कर, कीना गृह का काम ।। 4 ।।

अगले दिन कारज निपटाये । फिर पुस्तक से हाथ लगाये ।।
वेद पुरान उपनिषद् पाये । कछु ज्योतिष के ग्रन्थ सुहाये ।।
हस्त लिखित सब पर निगरानी । धूप दिखाय धरीं सयानी ।।
देखत बड़ बड़ाई रत्नावलि । पड़ी रहो सूखी सुमनावलि ।।
किस मुहूर्त में तुमको लाया । अब स्पर्श हेतु तरसाया ।।
चलौ बनो अब मेरि सहेली । इक दुख सुख की मात्र अकेली ।।
तुम मेरी अरु मैं हूं तेरी । विपिदा काटें बनकर चेरी ।।

दोहा – शिक्षा लें इस बात की, कितना कोइ महान ।
शेष काम रह जात हैं, जीवन के दरम्यान ।। 5 ।।

जव परिवेश बदल जाता है । पिछला काम टूटता नाता [illegible] है ।।
बड़ोंबड़ों की दशा दिखानी । मातपिता सुधि भूलत ज्ञानी ।।
करें गुरू की नित्य प्रसंशा । जिन उपदेश पलट दी मंशा ।।
राम कथा बहुतहि मन भाई । तजी नारि प्रभु लगन लगाई ।।
राम नाम अति है सुखदाई । पर मेरी तो हंसी कराई ।।
जन्मत राम शब्द मुख बोला । जिससे नाम हुआ रम बोला ।।
सुनते मां गई स्वर्ग सिधारीं । तातहु पुनः देह तज डारी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – हरको आ ठाड़ी भई, भौजी मेरे हाथ ।
देती जाओ वस्तुऐं, जमा धरूं इक साथ ।। 6 ।।

पुस्तक लेते हरको कहती । मैं भी अब हूँ पढ़ना चहती ।।
सुन रतना बोली यह बानी । खानी डाट पड़े मनमानी ।।
बोली इसमें कहा बुराई । गुरू हमारे रहे गुसाईं ।।
गुरु माता तुमहू ठहराई । पढ़ने में सब सहूं कड़ाई ।।
गणपति माता मुझसे कहती । पढ़वाना वो गणपति चहतीं ।।
कहो आप तो करूं प्रचारा । बालक आवैं तुम्हरे द्वारा ।।
बात सत्य है तुम जो कहतीं । इसी बहाने काटें विपती ।।
भेंट राशि कुछ आजायेगी । नहीं याचना कहलायेगी ।।

दोहा – बात बात में तै हुई, शिक्षा की यह बात ।
सभी पढ़ाना चाहते, दुनियां में शिशुजात ।। 7 ।।

रामा चक्कर रोज लगाते । रतना व्यस्त देख लौटाते ।।
बालसखा तुलसी के ठहरे । फिर दीक्षा ले चेला गहरे ।।
हनूमान के दरसन जाते । रामकथा सुनकर हरषाते ।।
रतना जी से भौजी कहते । गुरु पतनी सा आदर करते ।।
दीपावली कथा मन आई । जो गोस्वामी उन्हैं सुनाई ।।
कहते भौजी को समझाई । रावण वधौ राम ने जाई ।।
आये लौट अयोध्या नगरी । मनी दिवाली शोभा बगरी ।।
इस दिन कथा गुसांई कहते । सभी प्रेम से सुनते रहते ।।
करते सभी गुसांई आसा । कथा सुनन की मन अभिलाषा ।।
सुन रतना कह जनजन वानी । कबहूं झूट न होत दिखानी ।।

दाकहा – तुम दोनों ही हो हठी, मैं वा दिन रहौ रोक ।
यमुना चढ़ी अपार थी, तौउ चले अतिशोक ।। 8 ।।

इतने में हरको धरबोली । मुझसे कहता घर चल भोली ।।
अब मैं घर किस मुंह से जाऊँ। रहा गँजेड़ी का समझाऊँ ।।
एक सौत जो घर में लाया । पेट न उसका भी भरपाया ।।
रतना समझी उसके मन की । कही बात नीकी गुन चुन की ।।
कामव्यथा केवल है मनकी । शमित होय संयम से तनकी ।।
चिन्तन कर मन निर्मल करले । आनंद ही आनंद वो भरले ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – बोली सुन कर के यही, मैं नहिं हूं नादान ।
रही आपकी बात जो, धूल न चंद मलान ।। 9 ।।

विधवा परित्यक्ता में अन्तर । वह निश्चिंत इसे रहता डर ।।
ले तारा को रतना मंदिर । दीपक रखवाने गई अन्दर ।।
दीपक लिया पुजारी जी ने । तारा हाथों रखवा दीने ।।
उत्सव का दिन था सुखदाई । रतना देखत खुशी मनाई ।।
आन दिवाली लक्ष्मी पुजी । कुलदेवतं मनावन सूझी ।।
पूजन तारा से करवाया । हरको धनियां भोग बटाया ।।
यही आस इक तरापति से । पढ़लिख नाम करे शुचिमति से ।।
वैसे लक्षण अच्छे दिखते । उच्चारण भी शुद्ध निकलते ।।

दोहा – हरको तारापती ले, आंगन में गई आय ।
फुलझड़ियां चलवा रही, खुशी मनाय मनाय ।। 10 ।।

नवम अध्याय – रामाभैया

दोहा – जन जन की यह रीति है, अपना जैसा जान ।
निज कमजोरी की तरह, जग को लेता मान ।। 1 ।।

जैनी एक गांव में रहते । ज्वर से ग्रसित पुत्र हित जगते ।।
भली जान हरको बुलवायो । दो दिन जागी उन्है सुवायो ।।
तीजे दिन रतना गृह आई । पूछी कां गायव रहि माई ।।
दूजे का दुख सह नहिं पाती । आय बुलावा वहिं चलजाती ।।
जैनसाब के घर से आई । उनके लड़के ताप सताई ।।
उनके घर रह दो दिन जागी । रामू आय ताप तब भागी ।।
उसकी औरत बड़ी विचित्रा । कहा कहा नहिं खोलति पत्रा ।।
मैं भी सुनूं कहा क्या उसने । यों ही सुन रक्खा है हमने ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – अतिउत्सुकता देख के, कहती तुम से मात ।
रामा के सम्बन्ध में, दुष्प्रचार की बात ।। 2 ।।

सुन चौंकी मन में घबड़ाई । क्यों करती अपवाद बुराई ।।
अपनी जैसी दूजे जाने । झूठ बकै शंक नहिं माने ।।
नीच प्रकृति के हैं सब लोगा । रहें रातदिन करते भोगा ।।
अपनी तो आपन ही जाने । सीता तक में लांक्षन माने ।।
धरती मां यदि तू फटजाती । तुझमें मैं भी जाय समाती ।।
अब तो कलियुग सच ही आया । सब मर्यादा जगत भुलाया ।।
जैसा चिन्तन रहे हमारा । वैसा कर्म करें हम सारा ।।
गहन सोच मैं डूबी रतना । बोली हरको चित्त न रखना ।।

दोहा – गुरू जी को अरू आपको, नहिं जाना संसार ।
पूर्व जन्म के कृत्य वस, लिया आय अबतार ।। 3 ।।

कोई कुशल पूछने आता । उसपर लांछन लाया जाता ।।
चाल चलन इनसा ही होता । तो क्यों पति फटकारा होता ।।
भीतर सोया तारा जागा । बोला डंडा कहां हमारा ।।
बड़बड़ात सुन रतना बोली । क्या कहता है बात निठोली ।।
ड़ंडा याद तुझे क्यों आया । किया रोष निज क्रोध दिखाया ।।
रामू ने आवाज लगाई । रतना सुत ले बाहर आई ।।
तारा रामू को पहिचाने । हाथ बढा लेने की ठाने ।।
तारा गोद लेलिया रामू । रतना खड़े खड़े कर ध्यानू ।।

दोहा – बोली भइया बात इक, कहती वुरा न मान ।
अच्छा नहिं लोगन लगे, तुम्हरा आवनजान ।। 4 ।।

बोले जिन उर चोर बसत हैं । वही भले को बुरा कहत हैं ।।
ऐसिन सीता दोष लगाई । दिया निकलवा घर से भाई ।।
सच तो सच होता है भौजी। कोई अर्थ लगा ले खोजी ।।
सियाराम कह घर चल दीने । मंदिर वैठन निश्चय कीने ।।
तारापति को वहां बुलाते । अपना खूब दुलार जताते ।।
लोगों ने जब यह सब देखा । निश्कलंक रामू को पेखा ।।
कोई बात अवस ही भोगी । कोइ कुतर्की कंह दी होगी ।।
यही द्वन्द जन जन मन छाया । आत्मग्लानि कर दूर हटाया ।।

दशम अध्याय – पाठशाला

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – मन रमता जिस काम में, मगन होय इन्सान ।
काम हाथ करते रहें, होती रह बतरान ।। 1 ।।

गणपति शिष्य गुसाईं जी का । चाल चलन उत्तम है नीका ।।
रतना मन विचार यह आवैं । शिक्षा पद्धति कौन चलावैं ।।
एक रही है प्रथा पुरातन । दूजी नूतन है अधुनातन ।।
शिक्षा मुझे सभी को देना । विधि विधान कार्य हैं लेना ।।
जातिपांति का भेद न माने । सब में समता मुझको लाने ।।
सब ही बालक पढ़ना चाहैं । क्यों न प्रेम से उन्हें निभाहैं ।।
सब बच्चों में समता लाऊँ । द्वेष विषमता सभी मिटाऊँ ।।
श्रम ही मेरा जीवन धन है । पर मेरा विद्रोही मन है ।।
रूढ़िबाद पाखंड न भावै । शिक्षा मेरी इन्हें मिटावै ।।

दोहा – अम्मीजी तब आगई, ले निज सुत को साथ ।
रतना ने बैठा लिया, कलम गहाई हाथ ।। 2 ।।

चरचा चली गांवभर फैली । रतना ने पठशाला खोली ।।
बोला अम्मी से रमजानी । ये क्या तुमने मन में ठानी ।।
निज गृह सिलते वस्त्र तमाम । उसे सिखाते सुबह औ शाम ।।
पंडित क्या है तुम्हें बनाना । जो पढ़वाती विद्या नाना ।।
बोली अम्मी अच्छों पासा । मिलती अच्छी बातें खासा ।।
यह तो तोहिन है इस्लामी । पाठन पढ़न नहिं बदनामी ।।
यदि पढ़ने से धर्म नसाबे । तो क्यों दुनियाँ पढ़ने जावै ।।
अव्वा के जो अव्वा तुम्हरे । पद लोलुपता धर्महि बिसरे ।।

दोहा – तो क्या चाची अपन को, हिन्दू लेंय बनाय ।
यह तो मन की बात है, खुदा एक कहलाय ।। 3 ।।

एक मुहल्ला काछी रहते । आपस में वे बातें करते ।।
अपने बच्चे लो पढ़वाई । तव तक प्रोहित जी गये आई ।।
सुना है रतना लगी पढ़ाने । जाति पांति के भेद न माने ।।
तब कुढ़ के पंडित जी बोले । वो क्या पढ़ा पायगी भोले ।।
जिसने अपना पती भगाया । उसका मन तो है भर माया ।।
रामचरन की हामें हामी । पढ़कर के क्या बनना नामी ।।
थोडे पढ़े तो हल नहिं भाते । जादा पढ़ै तो घर से जाते ।।

दोहा – भई भीड़ बातें सुनत, पंडित जी महाराज ।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
लोग विचारें मनहिमन, है क्या ये नाराज ।। 4 ।।

धोती वाले करें बुराई । धर्म नष्ट हित रतना आई ।।
सुन रामा मन में खिसिआये । पंडित हैं लक्षन नहिं पाये ।।
तबहि वसंत पंचमी आई । शारद पूजन दिवस मनाई ।।
विद्यार्थी गण सब ही वैठें । पैर छुऐं दे दे कर भेंटें ।।
रतना रामू को बुलवाये । बैठक में तिनको बैठाये ।।
औरहु पुरा परौसी आये । सोचत मन क्या बात बताये ।।
बोली रतना मीठी बानी । कदम उठाया सो सब जानी ।।
वेद चार दस अष्ट पुराना । शतक उपनिषद सुमति प्रमाना ।।
बाल्मीक रामायन संस्कृत । नहीं ज्ञान की होती है हद ।।

दोहा – मैं सब को इक दृष्टि से, निसिदिन करूं विचार ।
पहले भी सम भाव था, अव भी रही निहार ।। 5 ।।

कौरव पाँडव समय समाजा । प्रथा तोड़ कर किया अकाजा ।।
एक लव्य शिक्षा नहिं दीनी । गढ़ी गई तब बात नवीनी ।।
शिक्षा भेद भाव नहिं भावै । यह प्रभाव प्रत्यक्ष दिखावै ।।
पुनः दक्षिणा की चालाकी । अवतक है समाज मैं झांकी ।।
जुड़ा समाज गोष्ठी कीनी । उसमें सभी ठान मन लीनी ।।
हम अंगुष्ठ नहिं करें प्रयोगा । अव तक मानत है वह लोगा ।।
छोटी बात बड़ी बन जाती । जो समाज में घर कर जाती ।।
नहिं चाहूँ कोइ आँख उठाये । इससे सब को दूं बतलाये ।।

दोहा – गुरू का होना एक सा, अरु समान व्यवहार ।
ज्यों धरती माता करै, सब बच्चों से प्यार ।। 6 ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

एकादश अध्याय – होराख्यता

दोहा – मौसम परिवर्तन कभी, जनता को दुख देय ।
बीमारी फैलन लगे, सबका सुख हर लेय ।। 1 ।।

तारा को है ज्वर चढ़ आया । चीख चीख कर मात रुलाया ।।
चढ़ा बुखार बहुत ही तेजी । रामू जबहि बुलावन भेजी ।।
रामू ज्वर फसली बतलाया । गया तुरत वह औषधि लाया ।।
दई दवा मन विनती कीनी । स्वस्थ शीघ्र हो आशा लीनी ।।
एक पोटली हमें मिली है । देखा उसमें दवा भली है ।।
रामू देख पहिचानन लागे । कछु समझे कछु भूलन लागे ।।
बोली रतना लेते जायें । हमरे काम न कोई आयें ।।
मन चिन्ता में डूबन लागा । फिर भी पूजा किया न नागा ।।

दोहा – नाना कह तारापती, चिल्लाये कर शोर ।
खबर भेज कहला दई, आई लौट बहोर ।। 2 ।।

वो तो तीरथ करन गये हैं । रामू चक्कर लगा रहे हैं ।।
तारा अब प्रलाप में आया । ज्वर तेजी से वह चिल्लाया ।।
देख दशा कोइ कहने लागे । चित्रकूट भेजो भई आगे ।।
अभी खोद कर औषधि लाया । करे ठीक हो प्रभु की दाया ।।
तीन दिवस यों बीते जाई । ज्वर में कमी न कुछ भी आई ।।
तन पर कुछ अरुणाई आई । जगह जगह बूंदें सी छाई ।।
बालक की यह हालत देखी । चेचक के सब लक्षण पेखी ।।
अब तो दवा बन्द कर दीनी । मैया देख मनौती कीनी ।।

दोहा – हँसिया खटिया तरे धर, द्वारे गाड़ी आग ।
छोंक बघारी बंद की, मातन सेवा लाग ।। 3 ।।

रामू रतना से यों बोले । अपना स्वास्थ्य भी रखना तौले ।।
मुझको जी कर क्या है करना । तारा सुखी रहे यह सपना ।।
अगले दिन ही माता दरसी । बड़ी बड़ी बूंदें सी परसी ।।
तारा का दुख कोइ न जाने । उसका कष्ट वही पहिचाने ।।
फलाहार कर दिवस गमावै । कर विनती वह मात मनावै ।।

जगदम्बा हे मात भवानी । सुत का कष्ट हरों निज जानी ।।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
हरको गई बुलावा देने । माता भेंट गवइयन लेने ।।
जुरी औरतें भेंटें गावैं । सुत हित इच्छा मन में लावें ।।
ला भभूत को तनहि लगावैं । भीगे दौल प्रसाद वटावें ।।

दोहा – रतना यह विनती करे, भैया हो आराम ।
भूलों को करके छमा, लाज राखियो राम ।। 4 ।।
एक तरफ संसार है, राम दूसरी ओर ।
जग से मैं तो जुड़ गई, तुम्हैं राम से जोर ।। 6 ।।

वाढ़ी सांस विकल हो तारा । चीख चीख निज मात पुकारा ।।
भजन बंद कर कानाफूसी । चली औरतन भई महसूसी ।।
पांच भजन कह जल्दी करते । है वेचेनी आशा धरते ।।
चीख सुनी सुत रतना धाई । देख दशा मन अति दुख पाई ।।
घबराईं सब गावनहारीं । गीत बन्द, कर भीजें सारीं ।।
कानाफूसी करने लागीं । हरको तब भीतर को भागी ।।
आसपास के सुन सब आये । रामू ने उनको समझाये ।।
रामू तब भीतर को भागा । देख दशा मन अति दुख लागा ।।
तारा का जब हाथ टटोला । दुख से राम राम मुख बोला ।।
रामू हरको तुरत बुलाई । भौजी को तुम देखो जाई ।।
रतना को बेहाशी आई । तब सबने है टेर लगाई ।।

दोहा – रामू भैया सोच मन, तारा को ले लीन ।
संस्कार हित चल दिये, पीछे सब चलदीन ।। 6 ।।

रतना को बेहोशी छाई । धनियां गंगासागर लाई ।।
छींटा दे दे होश कराया । गई निगाह सूना घर पाया ।।
हाय हाय तब टेर लगाई । मुंह से बोला ही नहिं जाई ।।
दन्ती बंधी खोल नहिं पाई । पानी डाल होश में लाई ।।
गणपति मां बोली यों वानी । राखें प्रभु तिहि भांति रहानी ।।
किसका बेटा कौन जमाई । लीला एक राम की छाई ।।
जग के हैं सब झूटे नाते । सभी करिश्मा में फस जाते ।।
रमजानी बोली सुन बानी । लौट आंय अब शायद स्वामी ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – लौट आय संस्कार कर, सभी लोग हैं द्वार ।
गणपति जी के पिता ने, समझाया कई बार ।। 7 ।।
तुम्हारा ही उपदेस है, करता है सब राम ।
जैसे तुलसी ने भजा, तुम भी लो हरिनाम ।। 8 ।।

शोक गीत

बोलो राम राम राम, बोलो राम राम राम राम ।
सारा जग जादू की पुड़िया, चमत्कार अभिराम ।।
अंत समय कोइ काम न आवै, इससे जप लो राम ।। बोलो. ।।
नाम बड़ा नहिं राम बड़ा है, कहते भक्त तमाम ।
वह तो बड़ी मुश्किल मिलता , नामहि करता काम ।। बोलो. ।।
इसीलिये वस नाम बड़ा है, है आराम हराम ।
जिसने जाना उसने माना, यों तो लोग तमाम।। बोलो. ।।
मन की माया छाई जगत में, लो इसको पहिचान ।
व्यर्थ "अनंत" है कहना सुनना, सब ही है बेकाम ।। बोलो. ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

द्वादश अध्याय – मान्यतायें

दोहा – आस्था और अनास्था, द्वन्द परस्पर होय ।
कबहुँ कोइ जीतत रहे, कबहूँ हारे कोय ।। 1 ।।

तर्क सभी के अपने होते । करते पुष्ट लगाकर गोते ।।
रतना बारंबार विचारे । कौन राम हित पिया निकारे ।।
राम करे तव पूरी आशा । किन्तु मुझे तो मिली निरासा ।।
कई राम की दई दुहाई । पर रक्षा हित भये न सहाई ।।
अपनी लीला कछू दिखाते । संकट में रक्षा कर जाते ।।
सबकोई अस्तित्व जनाते । इससे उनसे जुड़ते नाते ।।
हम सब धर्म उसे ही मानें । परम्परा गत जो कुछ जाने ।।
करें प्रार्थना होय विफल तब । करें राम पर शंका हम सब ।।

दोहा – नहीं पुण्य आड़े हुआ, वंश गया अब डूब ।
धर्म ग्रन्थ माने कोई, मरूं जाय अब खूब ।। 2 ।।

कहते जब दुर्दिन आ जाते । पलटे बुद्धि कुकृत्य कराते ।।
मम विश्वास मिटा ही डाला। कौन नहीं सुन हो बेहाला ।।
था इक मात्र सहारा मेरा । छीन लिया मम ओर न हेरा ।।
यदि अस्तित्व तुम्हारा होता । तो क्यों गाल बजाती थोता ।।
पशु पक्षी तुमको नहिं जानै । दुख सुख उनके उर नहिं आने ।।
दिखती यह मानुष की माया । अनुभव निज जग में फैलाया ।।
दूजों को विश्वास दिलाया । यही धर्म जग का कहलाया ।।
चन्द्र सूर्य को कोई माने । पंच तत्व की बात बखाने ।।

दोहा – शान्ति मिली नहिं आज तक, यह तो जग की रीति ।
अपने अपने ढंग से, करते सब परतीत ।।3।।
सत्य सत्य सब कोई कहै, सत्य गले की फांस ।
मारे पीटे दुःख दे, लेन न देवें सांस ।।4।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

सोचत सोचत हिम्मत आई । जग में होगी अरे हसाई ।।
साहस वांध धरूं उर धीरा । आगे की सोचूं तदवीरा ।।
हरको आय कही तब बानी । एक बात मेरे उर आनी ।।
गुरू जी पास चलें हम दोनों । सुन शायद पग धरें विछौनों ।।
मुझ को भय इतना ही लगता । आस्था से नहिं होय विमुखता ।।
समाचार कैसे पहुँचाऊँ । युक्ति न मन में ऐकउ पाऊँ ।।
वे विद्वान राह बतलावैं । जो कछु कहें समझ के आवैं ।।
रमता जोगी बहता पानी । इनकी गति काऊ नहिं जानी ।।

दोहा – जो होनी थी हो चुकी, बच्चों से कह आव ।
कल्ल पढ़ाई शुरू है, तुम सब ही आजाव ।। 5 ।।

बालक फिर से लगी पढ़ाने । कटता समय दुःख विसराने ।।
रामू भैया के मन आई । पता लगाऊँ गुरू का जाई ।।
पूछ ताछ लोगन से करते । पथिक राह में जोभी मिलते ।।
इत रतना से बात चलाई । मिले पता तब गुरू ढ़िग जाई ।।
साथ चलन तुम करो तैयारी । यह विनती लो मान हमारी ।।
सभी ग्राम जन मन यह आई । गोस्वामी से मिलहैं जाई ।।
सबकी बात टारहों कैसे । जाना भी चाहूंगी बैसे ।।
रामू की जिद कोउ ना टारै । अवस करें जो जियें विचारै ।।

दोहा – कहें सभी या बात को, जो पंचन की राय ।
वो ही प्रभु की राय है, मेरे मन वह भाय ।। 6 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

त्रयोदश अध्याय – चित्रकूट

दोहा – मैया मन में सोचती, पथप्रशस्ति की बात ।
बाधा बन जाऊँ न कहिं, बार बार मन आत ।। 1 ।।

रहै जरूरी मुझको जाना । अहो राम तुम मनहि समाना ।।
सीता माता मन को फेरें । दया दृष्टि कर मुझको हेरें ।।
मृदु मुस्काते हरको बोली । गुमसुम रहो मात तुम भोली ।।
दरसन चाह हृदय में आती । गुरू का पता सही नहीं पाती ।।
रामू भैया कह रये मोते । मावस आई सोम सँजोते ।।
चित्रकूट का मेला भरता । संत आगमन पावन लगता ।।
गुरू जी वहां जरूरी आवें । रतना सुन मन में हुलषावें ।।
मन दोनों का हरषित भारी । यह संजोग बहुत सुखकारी ।।
इतने में रामू अब आये । संत एक के बचन सुनाये ।।
रामघाट गोस्वामि विराजे । शीघ्र चलें सामा सब साजे ।।
हरको हूं चलने की ठाने । करी तयारी प्रातः जाने ।।

दोहा – यह कह रामू जी गये, निपटाये सब काम ।
पैदल ही सब जायेंगे, वहिं होगा विश्राम ।। 2 ।।

खबर गांव भर ने जब पाई । संग मात के चल हैं भाई ।।
नर नारी सब चले सबेरे । झुंड बनाये अलग घनेरे ।।
एक पंथ द्वै काज संवारे । तीरथ अरू गुरू दर्शन प्यारे ।।
राम राम गावत हरषाई । सभी निकल चल दीने आई ।।
रतना मन में विनती करती । विरह व्यथा में कब से दहती ।।
स्वामी ने कुछ सुधि ना कीनी । बें तो रहें भजन लव लीनी ।।
नारी बाधक बनी भजन में । नर्क द्वार माना निज मन में ।।
जन्म सदा जो देती नर को । नर ने घृणित बनाया उसको ।।

दोहा – सोचत गति धीमी भई, निकल गये सब दूर ।
हरको ने टोका तभी, चाल बढ़ी भर पूर ।। 3 ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

निकट पहाड़ी ग्राम दिखाई । निकलें जंगल ही आजाई ।।
सब हि ग्रामजन गुरू जी जाने । कथा सुनन के व्याज वखाने ।।
सुना जभी गुरू माता जाई । धन्य धन्य कह करें बड़ाई ।।
स्वागत हेत सभी जन आये । मैं अपराधिन यह नहिं भाये ।।
पुन है पुत्र शोक फिर मारी । मुझ सी हतभागिन को नारी ।।
स्वागत होता पति के कारन । आइ बुलाने एक पुजारिन ।।
चलो बहिन घर भोजन कर लो । रात होयगी कुछ श्रम हरलो ।।
फिर गोस्वामी जी क्या जाने । वे विरक्त क्या रहें ठिकाने ।।

दोहा – परिचित जन को ले गये, सभी बुलाय बुलाय ।
जन समूह वहं रम गया, कुछ विराम हो जाय ।। 4 ।।
रतना हरको ले गये, रामरतन पहिचान ।
खा पीकर वापस हुये, जुड़ै वहीं मैदान ।। 5 ।।

कोई लोक गीत है गाता । कोई सुन्दर भजन सुनाता ।।
सुन सबही आनंदित होते । कोई राम प्रसंग संजोते ।।
कोई श्री गुरुजी की बातें । लागे कहन प्रेम के नाते ।।
मैने सुना भये विरागी । अच्छी इन्हें राम धुन लागी ।।
इस युग में अब कौन है ऐसा । घंटो भजन करत हो वैसा ।।
बोला रामू गुरू हमारे । क्या तुमने ऐसेहि विचारे ।।
मैं जो दीक्षा लीनी उनसे । यों ही ले लीनी या गुन से ।।
उनको तो अवतारी जानो । धन्य भूमि के भाग्य बखानो ।।

दोहा – कामद गिरि दर्शन हुए, सबने किया प्रणाम ।
हे प्रभु विपिदा काटवे, जग प्रसिद्ध तुव नाम ।। 6 ।।

भये अंधेरे पहुंचे घाटा । मंदाकिनि मैया लख ठाटा ।।
दर्शन कर सब मन हरषाई । पी निर्मल जल तपन बुझाई ।।
रुके वहीं रामू की सूझा । आगे बढ़ कर उनने बूझा ।।
सुनते यहीं गुफा ठहराई । गोस्वामी का पता लगाई ।।
पता लगाय कहन को लौटे । हैं गुरुजी साधुन संग जोटे ।।
सुन हरषाने सब ही लोगा । दरस परस का बना सुयोगा ।।
रतना के मन अबहु कचाई । मिलन इजाजत दैं तब जाई ।।
रामू आज्ञा लेने जाई । लाय प्रसाद सबन बटबाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – खापीकर विश्राम लें, मंदिर रामहि जाय ।
प्रात काल वे मिलेंगे, दिया प्रबन्ध कराय ।। 7 ।।

सुन रतना यह वानी वोली । तारा की कछु बात न खोली ।।
वोले रामू पता उन्हैं है । प्रभु इच्छा मन मांह गुने है ।।
कितने निष्ठुर है ये स्वामी । इनके हृदय दया नहिं जामी ।।
लो प्रसाद सब मिलकर पाओ । खा पीकर मेरे संग आओ ।।
सभी थके थे चलकर सोये । प्रात मिलन की आस संजोये ।।
प्रातः काल उठे सब लोगा । भारी भीड़ विपत्ती भोगा ।।
स्नान ध्यान पूजन को कीना । गये गुफा गोस्वामी चीना ।।
वैठे तखत गुसांई पाये । सभी मिले मन में हरषाये ।।

दोहा – कर प्रणाम चरनन छुए, बैठे सब ही लोग ।
रतना भी सब की तरह, वैठी निज फल भोग ।। 8 ।।

हरको देख गुसांई बोले, सभी ठीक है मन दुख तौले ।।
बोली तारा गया तुम्हारा । सुनकर सभी मौन को धारा ।।
रामू मौन तोड़ कर बोले । अब तो भौजी रही अकेले ।।
पाठक जी गये तीरथ करने । जीवन के सुख दुख को भरने ।।
गंगेश्वर को तो तुम जानो । लग जाये चक्कर तब मानो ।।
सुन बोले श्री तुलसी दासा । लैन दैन का सभी तमासा ।।
इतने दिन को था वो मेरा । चुका कर्ज कहिं डाला डेरा ।।
माता रह अब तो राम सहारे । करैं गुजर जीवन भर सारे ।।

दोहा – हाड़ मांस की प्रीति का, इक दिन तजना होय ।
राम भरोसे सब रहैं, करौ आसरौ सोय ।। 9 ।।
गणपति माता भागवति, कही बात दुहराय ।
बोले तुलसीदास जी, इससे बड़ कछु नाय ।। 10 ।।

पुन बोले परिकरमा जाओ । कामद गिरि दर्शन कर आओ ।।
करूं व्यवस्था खान पान की । जब तक लौटो कृपा राम की ।।
चल दीने सब राम सुमिरते । राम काज का चिन्तन करते ।।
पहुँचे पूजन अर्चन कीना । नरियल भैंट चढ़ाइ प्रवीना ।।
कर दर्शन परिकरमा कीनी । तुलसी बाबा कुटिया चीनी ।।
भरत मिलाप चिन्ह को देखे । लखन टेकरी दृश्यहु पेखे ।।
चारों ओर दिखे हरियारी । नाले पर्वत दृष्टि डारी ।।
बीच बीच में मंदिर जेते । सभी निहारे प्रेम प्रतीते ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दोहा – दरसन परसन कर सभी, राम घाट की ओर ।
आये दौरत शीघ्र ही, लगे ठिकान` ठौर ।। 11 ।।
भोजन कर विश्राम ले, हनुमत धारा जांय ।
दरसन परसन मन हरन, देख देख हरषांय ।। 12 ।।

सीता रसोइ दृश्य ललामा । ताके ऊपर है इक ग्रामा ।।
लम्बा चौड़ा है मैदाना । करते खेती वहां किसाना ।।
आगे चल जंगल आजावै । तहां देवअंगना भावै ।।
आगे बहती गंगा धारा । कोटि तीर्थ कह जाय पुकारा ।।
नीचे बांके सिद्ध कहावैं । मानो हम आकाश भ्रमावैं ।।
दृश्य पहाड़ी आंनद देई । करबी निकट देख सब लेई ।।
ऐसा पर्वत विचित्र सुहावन । निरख निरख मन होता पावन ।।
आये लौट राम के घाटा । कर जल पान बखाने ठाटा ।।

दोहा – प्रात होत पुन चल दिये, दर्शन चारों धाम ।
कुंड जानकी का निरख, श्री प्रमोद वन ठाम ।। 13 ।।

फटिक शिला की सुन्दरताई । मंदाकिनि जी निकट बहाई ।।
संत रहें मग आवत जाता । अनुसुइया तक लागा तांता ।।
चहूं ओर हरियाली छाई । वन ही वन शेभा अधिकाई ।।
मंदाकिनि का दिव्य किनारा । कल कल छल छल बहती धारा ।।
अनुसुइया के पर्वत निकली । उनकी कथा सुनत ही उछली ।।
पहुंचे उनका करजै कारा । सारा वैभव जाय निहारा ।।
तीन पुत्र हैं तिनके गाये । ब्रह्मा विष्णु महेश बताये ।।
सो सीता पतिव्रत उपदेसा । विचरत गये राम अरु शेषा ।।

दोहा – मिली गुप्त गोदावरी, परवत अन्दर धार ।
देव सभी आये तहां, सेवा हित सरकार ।। 14 ।।
लौटे आश्रम अत्रि ऋषि, किया रात विश्राम ।
टिक्कड़ खाय बनाय कें, जपा राम का नाम ।। 15 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कोई भजन राम के गाये । कोई लोकगीत मन लाये ।।
चरचा अनुसुइया के तप की । करते करते आखें झपकी ।।
होत भोर चित्रकूटहि आये । उठी हाट के लक्षण पाये ।।
रामू गये गुसांई मिलने । लाय प्रसादी पाई सबने ।।
शीतल जल मंदाकिनि मैया । किया पान पुन बनी रसोइया ।।
निज निज भोजन सभी बनाया । गोस्वामी जी को बुलवाया ।।
रामू भैया गये लिवाने । भोजन तबतक लागे पाने ।।
रामू लौट आय सब देखे । समझे सभी लगा कर लेखे ।।

दोहा – कही तौल के सबन से, रामू जी ने बात ।
जब मैं पहुंचा पाय रहे, गोसांई जी भात ।। 16 ।।

खा पीकर सब भये निश्चिन्ता । सोवन गये मन्दिर भगवंता ।।
रतना मन आवहि एक भावा । प्राणनाथ का हो घर आवा ।।
प्रात काल उठ मंत्र विचारा । भरत कूप को जाय निहारा ।।
कर स्नान बड़ाई कीनी । धन्य धन्य तुम रामहि चीनी ।।
लौटत शैया राम कहाई । सोई निरख चकित हो जाई ।।
गुफा ओर लौटा समुदाई । पहुँचा बाहर बैठा जाई ।।
रतना केवल भीतर जाई ।जहां रसोई साज सजाई ।।
जा सहायता मैया कीनी । खान पान में सुविधा दीनी ।।
पीछे रतना भोजन कीना । स्वामी निरख शान्ति मन लीना ।।
निकट गुसांई बैठे आई । रामू भैया बात चलाई ।।
गुरूजी सब दरसन कर आये । अब क्या आज्ञा देव बताये ।।

दोहा – बोली रतना "बुद्ध" हू, गये जन्म के धाम ।
कह गुसांई लायक बनूं, आऊंगा तब ग्राम ।। 17 ।।

सुन समझे सब निज निज मन में । आयें अवस काउ दिन घर में ।।
भई रात अव जा सो जाओ । आटा दाल मार्ग बंधवाओ ।।
छूकर चरण सभी उठ बैठे । शयन हेत मंदिर में पैठे ।।
भोर भये सबकरी तैयारी । कर स्नान गुफा पग धारी ।।
छुये चरण सब ही गुरूजी के । दई असीस सबहु रहु नीके ।।
रतना चरण छुये कर विनती । करहु कृपा राहें रहु गिनती ।।
ले आज्ञा यों सब भये चलते । अश्रु नयन से सबके ढलते ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

चतुर्दश अध्याय – छोटी बड़ी एवं प्रेम–पत्र

दोहा – जिमि मीठे के संग में, है नमकीन सुहात ।
त्यों जीवन के बीच में, हास्य व्यंग दरसात ।। 1 ।।

होली आई सभी मनाई । बोली हरको सुन भौजाई ।।
वह सुसरा रस्ते में रोके । करे विनय जाऊँ नहिं धोके ।।
रतना कही चली ही जाती । बोली हरको क्यों ललचाती ।।
कहता छोटी मार भगाऊँ । तुझको अपने घर बैठाऊँ ।।
तब तक छोटी ही चल आई । फटी चूनरी थेगर छाई ।।
चरणन छूकर करी प्रनामा । रहौ सुहागिल वन सुखधामा ।।
मुझे शरण में ले लो मैया । बड़ी तरह हो जाव खिवैया ।।

दोहा – लख हरको कहने लगी, जै जै सीताराम ।
कहु छोटी कैसे यहां, कहि मिलने के काम ।। 2 ।।

बोली तुम सब जानो माया । दम में चूर सदा रहे छाया ।।
अच्छा अच्छा भोजन चाहै । काम धाम कुछ करता नाहै ।।
कैसेहु गुजर करत हों अपनी । पाखंडी वह बनता भजनी ।।
बोली हरको भाग्य जो अपने । देखन आई इसके सपने ।।
हरको महिमा रतना गाई । बनी पंच निर्णय को जाई ।।
देख दशा मन पाता दुख री । ले जा मेरी लंहगा चुनरी ।।
सुन हरको चुनरी ले आई । छोटी के वह हाथ गहाई ।।

दोहा – भई कृपा अब राम की, मिली प्रसादी मोय ।
मैया ने कीनी दया, चल दी घर को सोय ।। 3 ।।
युवा अवस्था तो सभी, जैसे तैसे काट ।
वृद्ध अवस्था हेतु ही, जोड़ें अपने ठाट ।। 4 ।।

रतना उर चिन्ता यह छाई । आई जरा गई तरुणाई ।।
हरको कही श्वेत भये केशा । जीवन कटा पती उपदेसा ।।
परित्यक्तापन अति दुखदाई । ईश भरोसे सोइ विताई ।।
सुन हरको पुन कहने लागी । सोचेंगें कुछ वे बड़भागी ।।
इतने में गणपति को पाया । प्रसंग पलट उसे समझाया ।।
एक पहर अब दिन चढ़ आया । शिष्य न अबतक कोइ दिखाया ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बोले आते होंगें अबही । इतने में जुड़ आये सबही ।।
गणपति सबको लगे पढ़ाने । रतना हरको भई रवाने ।।

दोहा – दूजे दिन की बात है, हरको सुन ली क़ान ।
साधु संत आये कोई, मंदिर हुइ बतरान ।। 5 ।।

बोली वह कहते थे ऐई । गुरुजी जाय अयोध्या सेई ।।
इतने में रामू वंह आये । समाचार कह सभी सुनाये ।।
बोले पता लगा गुरूजी का । संत बसे मंदिर नजदीका ।।
गुरूजी रहैं अवध स्थाना । समाचार कोइ हो भिजवाना ।।
बोली इक दोहा लिक्खा है । वो ही देती जो रक्खाहै ।।
सुन आश्चर्य चकित भये दोनों । लाओ क्या लिक्खा अनहोनो ।।
रतना हाथ गहाया उनके । पढ़ने लगे रामु मन गुनके ।।
दोहा – कटि की छीनी कनक सी, रहति सखिन संग सोय ।
और कटे को डर नहीं, अंत कटे डर होय ।।6 ।।
हरको सुनकर समझ लई, वृद्धापन संकेत ।
अच्छा दोहा यह रचा, गोस्वामी के हेत ।। 7 ।।

लेकर रामू भये रवाने । जै जै सीताराम बखाने ।।
साधू पत्र दिया सो जाई । या प्रकार उन ढिंग पहुँचाई ।।
लेकर साधू भये रवाना । इतमें मैया चित उलझाना ।।
सब कुछ समझ जांयगे स्वामी ।उत्तर अवस आय द्रुतगामी ।।
सोमवती का जुड़ा सुयोगा । यहि पथ का करें संत प्रयोगा ।।
टोली कई निकल के जाती । इक टोली मैया ढिंग आती ।।
पता पूछ कर वह रुक जाती । रतना निकल वाहरे आती ।।
दिया पत्र पुन हुई रवाना । हमको परवी के हित जाना ।।
उसमें दोहा एक लिखा था । मां रतना ने उसे पढ़ा था ।।
दोहा – कटे एक रघुनाथ संग, बांध जटा सिर केश ।
हम तो चाखा प्रेम रस, पतनी के उपदेश ।। 8 ।।
पढ़ कर रतना मग्न हुई, पा स्वामी आदेस।
फूली फूली फिर रही, चिन्ता रही न लेस ।। 9 ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

पंचदस अध्याय – संत

दोहा – सोमवती जब जब पड़े, रतना करती ध्यान ।
चित्रकूट के दृश्य लख, हो आनंद महान ।। 1 ।

शिक्षण का जो नित क्रम चलता । उससे ही तो घर है पलता ।।
सोमवती संतन के जत्था । निकलें द्वारे करे व्यवस्था ।।
रतना उनसे पूछत रहती । कहां गुसांई मिलहै कहती ।।
कहें संत अब जगे गुसांई । उनके दर्शन को सब जाई ।।
कहैं स्वामि जी चंदन घिसते । राम संत बन उनसे मिलते ।।
जब उनने पहिचान न पाये । हनुमत शुक बन उन्है बताये ।।

दोहा – चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर ।
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक करें रघुवीर ।। 2 ।।

भई धन्य मैं सुन तब वानी । प्रभु की महिमा जात न जानी ।।
बोली हरको जल ले आओ । आटा दाल ले भोग लगाओ ।।
सुन जुड़ आये बहुतक लोगा । सेबा कारन बनो सुयोगा ।।
इलाहबाद के पथ में पड़ता । पथिकों की केवल यह रस्ता ।।
तब तक रामू भैया आये । बैठा पीढ़ा पर हरषाये ।।
साधुन कहा कथी रामायन । गोस्वामी जी अति हि सुहावन ।।
काशी में चरचा सब करते। रामायण गोस्वामी कहते ।।
कथा सुने झूमे नरनारी । करें राम धुन दे दे तारी ।।

दोहा – समाचार यह दैन को, आया था में मात ।
सेवा घर में राम की, संध्या करने जात ।। 3 ।।

भजन राम का जब जब करती । तब तस्वीर तुम्हारी दिखती ।।
जो जो वस्तु तुम्हारी पाती । उसमें झांकी तुम्हरी आती ।।
जभी नींद नहिं मुझको आती । तभी कोई गीत हूं गाती ।।
युगदृष्टा जब कोई कहता । तभी हर्ष से हृदय उमड़ता ।।
मैं तो सुनकर भई बाबरी । फूल न अंग समात गातरी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – हों कब दर्शन ग्रन्थ के, मन में उठे विचार ।
हे प्रभु तुमसे है विनय, करो इसे साकार ।। 4 ।।

एक दिवस रामू घर आये । संध्या समय मनहि हरषाये ।।
भौजी खबर सुनो अभिराम । मंदिर पर आये श्री राम ।।
समझाओ क्या कोई आया । उत्तर मिला गुरू की माया ।।
सुनकर समझ गई सब रतना । पूरन हुआ आज वह सपना ।।
सभी ग्राम है जुड़ा पहां पर । तुमको खबर दई मैं आकर ।।
आठ साधु हैं संग में उनके । भोजन आज होंयगें घर के ।।
गइ थकान मन हरषित भारी । लगी करन रसोइ तयारी ।।
सामग्री भोजन की आई । पता नहीं किसने पहुंचाई ।।
रामू कह ढिंग उनके जाऊं । श्रवण करूं कथामृत पाऊं ।।
व्यारू समय उन्हैं ले आऊं । तुमसे उनकी भैंट कराऊं ।।

दोहा – मंजन कर पावन हुई, अरु आराधे ईश ।
करन रसोई जुट गई, सभी मसाले पीस ।। 5 ।।

गणपति की मां को बुलवाया । आकर उसने हाथ बटाया ।।
रामू लेन गये गोस्वामी । संग संत थे उनके नामी ।।
स्वागत करके चरन धुवाये । आसन पर उनको बैठाये ।।
रतना ने जल परसन कीना । किया आचमन आसन लीना ।।
थाली परस सामने लाई । एक एक कर भोग लगाई ।।
खुदहि परोसन काज संवारी । संतन तृप्त किये सुखकारी ।।
अंत दक्षिणा करन गहाई । स्वामी को दीनी सिर नाई ।।
चीख छूट गई अश्रु प्रवाहू । बोले सब प्रभु करें निबाहू ।।

दोहा -- अब दरसन कब होंयगे, निसि दिन रहूं उदास ।
रामायन प्रति कब मिले, एक मात्र मम आस ।। 6 ।।
प्रात काल ही चल दिये, श्री यमुना के पार ।
पहुंचावन आये सभी, करते जै जै कार ।। 7 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

षोड़ष अध्याय – काशी

दोहा – गोस्वामी जा दिन गये, चल काशी की ओर ।
तब से सबके मन उठे, काशी चलन हिलोर ।। 1 ।।

मिलते जब ही लोग पुराने । काशि गमन की चर्चा ठाने ।।
यों चरचा फैली सब ग्रामा । मैया चले बने तब कामा ।।
गणपति मां भगवती बाई । सोमवती पारो जुर आँई ।।
रतना से मिलना ठहराई । स्वागत कर आसन बैठाई ।।
पारवती बोली हरषाई । सभी गांव के मन यह भाई ।।
मइया चले तो काशी जावैं । गोस्वामी के दर्शन पावें ।।
चित्रकूट को गै इक बारा । हिय हरषा आंनद अपारा ।।
अब सबके मन ये है आई । संग चले फिर रतना माई ।।

दोहा – सुन रतना कहने लगी, जो चलने की बात ।
टालूं किस विधि में भला, दर्शन की सौगात ।। 2 ।।
चित्रकूट की भांति ही, कशी में मिल जांय ।
हरको बोली मुदित हो, दरसन गुरु के पांय ।। 3 ।।

सोमवार निश्चित कर डाला । चलीं मुदित हो निज घर बाला ।।
रतना सोच रही मन माहीं । लीला प्रभु की जानि न जाहीं ।।
देखो सबके मन क्या भाया । राम विचित्र तुम्हारी माया ।।
जब हम अंतर करें विचारा । तो घटनायें बने सहारा ।।
घटना पूर्व नियोजित लागें । क्या होगा बतलावें आगें ।।
करी व्यवस्था घर की सारी । सत्तू बांध लिया सुखकारी ।।
हरको बोली संग चलूंगी । तुम बिन कैसे यहां रहूंगी ।।
यात्री रतना के गृह आये । काशी चलन हेत हरषाये ।।

दोह – कर प्रदक्षिणा ग्राम की, हनुमता मंदिर आय ।
दर्शन कर सब चल दिये, प्रभु को सभी मनाय ।। 4 ।।
गये घाट तक प्रेमि जन, छू माता के पैर ।
दान दक्षिण भैंट दी, करी नाव की सैर ।। 5 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पहुंची खबर महेवा जाई । रतना जाती मिलन गुसांई ।।
खबर पाय सब ही चल दीने । स्वागत साज संग में लीने ।।
पहुंचे पार महेवा ग्रामा । बैठे सब मिलने इक ठामा ।।
मैया के पग सबही परसे । दान दक्षिणा भैंट नजर से ।।
घर चलने की बात उचारी । यात्रा जान मना कर डारी ।।
इलाहबाद को किया पयाना । पहुंच वहां कीना विश्रामा ।।
सत्तू खाकर रात बिताई । प्रातः दल संगम पर जाई ।।
तिरवेणी असनान कराई । अक्षय वट को भेंटा जाई ।।
भरद्वाज आश्रम को हेरा । वेणी माधव दीन्हा डेरा ।।

दोहा – एक दिवस विश्राम कर, प्रात काल चल दीन ।
बीच वसेरा कर सभी, काशी दरसन कीन ।। 6 ।।
पता चला लोलार्क पर, गोस्वामी का बास ।
चले सभी उस दिसा को, श्री गुरू जी के पास ।।7।।

बाहर रूक सब करें प्रतीक्षा । आज्ञा मिले ठहरने इच्छा ।।
रामू भैया अन्दर जाकर । लौटे गोस्वामी को लाकर ।।
चरन कमल छूने सब दौड़े । आसिष पाइ सभी कर जोड़े ।।
रतना ने तब सीस नबाया । हुइ प्रसन्न पति दर्शन पाया ।।
देखी सब प्रभु की प्रभुताई । तेज भाल चमके अधिकाई ।।
गुरू जी एक साधु बुलवाया । उसने सब को जा ठहराया ।।
था इक मंदिर परम सुहाना । सुख सुविधायें उसमे नाना ।।
विछी हुई थी वहां चटाई । वैठत भोजन आज्ञा पाई ।।

दोहा – सब ही भोजन को गये, सुन्दर रहा प्रबन्ध ।
पा प्रसाद विश्राम हित, लौटे हिय आनन्द ।। 8 ।।
थकित श्रमित सब जन रहे, गये लेटते सोय ।
सुनी आरती शंख धुन, जागे जडता खोय ।। 9 ।।

शनैः शनैः चरचा सब फैली । दरस हेत पत्नी आ मेली ।।
रतना सुनी खबर यह सारी । पति विरोध है यह पर भारी ।।
भक्त रहे गोस्वामी जी के । दर्शन करें जाय मां जी के ।।
करना चाहें सभी निमंत्रण । गंगाराम एक उनमें जन ।।
रहा जोतिषी प्रिय उन चेला । आज्ञा पाय निमंत्रण मेला ।।
दिन ढ़लते इक बग्घी आई । मैया बैठ उसी में जाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran
ढ़िग टोडर मल का परिवारा । आया मिलन मात से सारा ।।
आज्ञा हो दरसन कर वाऊँ । बोली मैया सब संग जाऊँ ।।

दोहा – चर्चा राम चरित्र की, चली कान ही कान ।
प्रतियां निर्मित हो रही, मेरे घर दरम्यान ।। 10 ।।
रतना सुन हरषित हुई, कैसा हुआ मिलान ।
जो इच्छा मेरे मन हि, पूर्ण करी प्रभु जान ।। 11 ।।

दरसन हेत चाहथी सव मन । तीजे दिन सब चले मुदित मन ।।
शाम होयगी सभी विचारा । लेन लगे कुछ स्वल्पा–हारा ।।
साधू एक संग कर लीन्हा । जिसने था सब मारग चीन्हा ।।
विश्व नाथ मंदिर जब आये । भारी भीड़ वहां पर पाये ।।
मध्य मार्ग मिल गई सयानी । रही पूर्व की जो पहिचानी ।।
संग हुई सब दरसन पाये । पूजे शिव अति मन हरषाये ।।
इक दालान कियो विश्रामा । बंदर ताक रहौ घर ध्याना।।
रतना कर से छीन प्रसादी । खाने लगा देख हरषाती ।।

दोहा – रतना कपि का नेहलख, जुड़े सभी नर नार ।
पूछन लागे कौन यह, सुन्दरता की सार ।। 12 ।।
गोस्वामी की भामिनी, सरसुती कहा पुकारि ।
रामायण जिनने रची, उन ही की प्रिय नारि ।। 13 ।।
सुन कर विस्मय में पड़े, कैसे तुलसी दास ।
वैरागी क्यों कर बनें, पत्नी थी जव पास ।। 14 ।।

कलुषित हृदय रहे जिन जनके । वो ही व्यंग करे गिन गिन के ।।
सुन बकवास मात चल दीनी । चलें प्रात ठान मन लीनी ।।
संग सभी दर्शन कर आई । जहां साधु ले गयो लिवाई ।।
संध्या हुई लौट तब आये । आश्रम आ सबने सुख पाये ।।
रतना हरको सों यों बोली । गोस्वामी ढ़िग जा हम जोली ।।
जान चहें प्रात सब साथा । दें आज्ञा हम होंय सनाथा ।।
हर को गई वहं कथा प्रसंगा । वहे जहां रामायण गंगा ।।
बैठी सुने वाट को हेरें । कब गोस्वामी हमको टेरें ।।
निरख गुसाई जी तब बोले । कहा हाल रतना मन डोले ।।
सब कछु बातें जान गुसाई । लौट जाव अपने घर माई ।।
हर को तब रतना को लाई । चरनन छू कह देव विदाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – बोले गोस्वामी तवहि, अब क्या मन रहि आय ।
रामायण की एक प्रति, मोकूं देव गहाय ।। 15 ।।
कल प्रातः ही जान चहुँ, लौट आपने धाम ।
और कछू मांगू नहीं, अंत गोद विश्राम ।। 16 ।।

कहा गुसाई दे संतोषा । हमें राम का पूर्ण भरोसा ।।
रात्री भोजन सब यहँ पावें । प्रातः काल हर्ष से जावें ।।
कितनी चतुर हैं रतना मैया । मांगा क्या वर गति सुधरैया ।।
फैली बात आश्रम हि जाई । कल मैया की होय विदाई ।।
आटा दाल व्यवस्था कीनी । बाँध पोटरी सब रख लीनी ।।
कर भोजन कीनो विश्रामा । प्रातः चलने अपने धामा ।।
प्रात काल उठ साज सजाई । रामू कह मठ चलिये भाई ।।
कर तैयारी गुरू ढ़िंग आये । चरनन छू कर भेंट चढ़ायें ।।

दोहा – सरसुति और शंकुन्तला, दीनी मैया भेंट ।
इतना धन में क्या करूं, आय समय की पेंठ ।। 17 ।।
भेंट लेय पति ढ़िंग धरी, कही स्वामि ले जाव ।
समय पाय आऊँ अवस, सीता राम कहाव ।। 18 ।।

गोस्वामी प्रति रतना दीनी । सीस चढ़ाय हर्ष उर लीनी ।।
शिशु सम ताह गोद ले राखी । सिर धर चल भइ जै जै भाखी ।।
सीताराम कह करी विदाई । सीताराम की फिरी दुहाई ।।
भई राम धुन राह बताई । राजापुर सब चल हरषाई ।।
राम नाम उच्चारण करते । मानो राम संग ही रमते ।।
मनु जलूस रामायन केरा । जहं तहं लोग मुदित हैं हेरा ।।
क्रम क्रम से लै सीस हि राखी । प्रेम मुदित राम ध्वनि भाखी ।।
यों चलते राजापुर आये । समाचार सुन लेने धाये ।।

दोहा – गाजे बाजे के सहित, मैया लई लिवाय ।
सब ही मिल जुल प्रेम से, तखत दई पधराय ।। 19 ।।
अपने अपने घर गये, रामायन रख आस ।
मैया कहि कल से कथा, पहर तीसरे पास ।। 20 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

सप्तदश अध्याय – रतना मैया

दोहा – घटनायें आनंदप्रद, बनती कहिं अनियास ।
असह व्यथा का समन हो, यदि प्रभु मैं विस्वास ।।1।।

यथा समय सब ही जुड़ आये । रतना मैया पौरि विठाये ।।
यथायोग आसन सब लीनी । मानस तिखुटी पर रखदीनी ।।
पीत वसन आच्छादित जिस पर । सीस नवा खोली तिखुटी धर ।।
लिखी लिखावट सुंदर कैसी । मणि कांचन संयोग हि जैसी ।।
सुमिर राम फिर वन्दन कीना । सस्वर पाठ मधुर स्वर भीना ।।
मंत्र मुग्ध सम सुन कर सबही । मानो शारद वाचन करही ।।
बांची आज पांच चौपाई । सुन सुन मोद बढ़ौ अधिकाई ।।
आगे समय नियत है कीना । नित बाचन का नेम जु लीना ।।

दोहा – भइ संध्या घर गये सब, तुलसी कथा सराह ।
बाबा तुलसी धन्य तुम, हिन्दी दई दरशाह ।। 2 ।।

भोजन कर जब रतना लेटी । हरको चौपाई गा बैठी ।।
रामहि प्रिय पावन तुलसी सी । तुलसीदास हित हिय हुलसी सी ।।
सासु नाम सुन वंदन कीना । ससुर नाम जिसमें लवलीना ।।
कैसे सास ससुर थे स्वामी । सुख की बेल हृदय जिन जामी ।।
प्रतिदिन पाठ नियम से चलता । राम कथा सुन हृदय उछलता ।।
सोते समय उसे दुहराती । सोच सोच मन में हरषाती ।।

दोहा – सती हृदय अनुमान किय, सब जानेउ सर्वज्ञ ।
कीन्ह कपट में शंभु सन, नारि सहज जड़ अज्ञ ।।3 ।।
छमा नहीं शिव कर सके, आप छमा कर दीन ।
कैसी हूं मैं स्वयं की, करती छाना बीन ।। 4 ।।
नारद मोह प्रसंग में, काम अन्ध की बात ।
बाही दिन की सुरति कर, बार बार पछताव ।। 5 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मानस पाठ सदा ही होता । सुबह शाम के कार्य संजोता ।।
लगतीं मध्यान्ह नित शाला । जिसे चलावें गणपति लाला ।।
मानस पाठ खबर है फैली । राम कथा सुन्दर अलवेली ।।
ग्राम ग्राम जन सुनने आवें । सरस कथा सुन मन हरषावें ।।
साधु संत सब सुनने आते । घर घर में वे खातिर पाते ।।
रतना मां मन यही विचारे । निज जीवन को आप निहारे ।।
हुलसी मां जनमत ही त्यागा । केकई मन ज्यों राम विरागा ।।
अनुसुइया प्रसंग कह डाला । मानो मेरे हित की माला ।।

दोहा – हरको रतना दोउ मिल, करती खूब विचार ।
नारी जीवन की व्यथा, पढ़ती बारंबार ।। 6 ।।

अनुसुइया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसील विनीता ।।
रिषि पतनी मन सुख अधिकाई । आसिष देइ निकट बैठाई ।।
दिव्य वसन भूषन पहिराये । जे नित नूतन अमल सुहाये ।।
कह रिषि वधू सरस मृदुबानी । नारि धर्म कछु व्याज बखानी ।।
मात पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुन राजकुमारी ।।
अमित दानि भर्ता वैदेही । अधम नारि जो सेव न तेही ।।
धीरज धरम मित्र अरु नारी । आपद काल परखिऐहिं चारी ।।
वृद्ध रोग बस जड़धन हीना । अंध वधिर क्रोधी अति दीना ।।
ऐसेहु पति कर किए अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ।।
एकइ धरम एक व्रत नेमा । काय वचन मन पति पद प्रेमा ।।
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं । वेद पुरान संत सब कहहीं ।।
उत्तम के बस अस मन माहीं । सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं ।।
मध्यम पर पति देखइ कैसे । भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ।।
धर्म विचार समझ कुल रहई । सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहई ।।
विन अवसर भय से रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई ।।
पति वंचक पर पति रति करई । रौरव नरक कल्पशत परई ।।
छन सुख लागि जनम शतकोटी । दुख न समझ तेहि सम को खोटी ।।
बिनु श्रम नारि परमगति लहई । पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई ।।
पति प्रतिकूल जनम जंह जाई । विधवा होय पाय तरुणाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

सोरठा – सहज अपावनि नारि, पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जस गावत श्रुति चारि, अजहुं तुलसिका हरिहि प्रिय ।।

पतनी विरह राम का वरना । क्या मम जीवन की नहिं घटना ।।
उनके नारी मन नहिं भाई । तासों उनने करी बुराई ।।
ढोल गंवार शूद्र पशु नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी ।।
नारि स्भाव सत्य कवि कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।।
साहस अनृत चपलता माया । भय अविवेक अशौच अदाया ।।
निज प्रति विंवहि वरु गहि जाई । जानि न जाय नारि गति माई ।।

दोहा – का नहिं पावक जर सकै, का न समुद्र समाय ।
का न करै अबला प्रवल, केहि जग काल न खाय ।।8।।

बोली हरको मीठी वानी । यह प्रसंग आपन नहिं जानी ।।
जिस प्रसंग में जो है घटना । वह प्रसंग वैसी ही रचना ।।
रामचरित रचने का कारन । मैं ही बनी एक निर्धारिन ।।
जलधि ज्वार बड़वानल जलता । जस उरमिला हृदय दहकता ।।
गुरुजी को लक्षमन ही जानो । तुमरौ नाम न कहूं दिखानो ।।
सुन अनुमोदन कीनो मैया । रहा ठीक ही कथा कहैया ।।
नहिं तो जुड़ता सारा तांता । जिससे जुड़ता मेरा नाता ।।
लोग बाग तव क्या मन कहते । भला बुरा सब भावुक सहते ।।

दोहा – यों बातें कह सो गई, लेते हरि का नाम ।
ताही बल सब जगत के, चलते दीखे काम ।। 9 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अष्टादस अध्याय – रामचरित – मानस

दोहा – रामचरित की कथा अब, जन चरचा की बात ।
जंह देखो वंह ही चले, सभी लोग बतरात ।। 1 ।।

प्रातः से सांय तक दिन भर । राम भक्त आते रतना घर ।।
घर घर चलती राम कहानी । गावें रामायन की वानी ।।
दूर दूर के सुन जन आते । रामायण सुन वे सुख पाते ।।
इक दिन रामू गणपति आये । कर चरचा उन मात मनाये ।।
हम हूं चह रामायन पढ़ना । दूसरि प्रति कैसे हो रचना ।।
अनुमति आप अगर दे देवें । तो हम उसकी प्रति कर लेवें ।।
सुन रतना यह बात कही है । कृति समाज की निधी रही है ।।
जितना ग्रन्थ प्रचारित होई । उतनी भगति प्रसारित सोई ।।

दोहा – कागज कलम मंगाय कर, प्रतियों की रख आस ।
दोपहरी निश्चय करी, वैठे दोनों पास ।। 2 ।।

बीच बीच शंकायें चलतीं । समाधान के साथ निपटतीं ।।
यों लेखन का क्रम हैचलता । लक्ष्य साधना का भी पलता ।।
व्यस्तहुआ अब अपना जीवन । मग्न हुआ मानस सेवा मन ।।
श्वेत केश सिर पर अब छाये । वृद्ध हुआ तन नहीं सुनाये ।।
दर्शन हित आवै समुदाई । जो जो निरखे करे बड़ाई ।।
एक बात मैया मन आई । अंत समय प्रभु मिलें गुसांई ।।
कीना प्रश्न किसी ने आकर । लव कुश कथा न कीन उजागर ।।
त्याग राम सिय नहीं सुहाई । इसी लिये यह कथा न गाई ।।

दोहा – भाषा क्यों रचना करी, यह विरोध की बात ।
समझ न पायें संस्कृत, भाषा सरल सुहात ।। 3 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

बढ़े साधना मानस गाये । हनुमत वरद हस्त सिर छाये ।।
भूत प्रेत सुनते ही भागें ।सब ही जीव सुनत अनुरागें ।।
मानस पाठ करें हरषाई । मन वांछित फल सब कोइ पाई ।।
सोते समय विचारे मैया । वनोवास संयम रखवैया ।।
संयम में यदि आवे बाधा । तो समझो जीवन है आधा।।
जैसे शिव गिरिजाहि सुनावें । वैसेहि आप मोय समझावें ।।
लगता मुझे भूल नहिं पाये । रचना लिखने में अपनाये ।।
कैसहु नाम लेत फल भारी । हाड़ मांस की प्रीति विसारी ।।

दोहा – दोनों की एकै दशा, रामनाम गुन गान ।
फिर प्रभु मेरा आपका, करें न क्यों कल्यान ।। 4 ।।

हाड़ मास की प्रीति छोड़े । राम भजन में नित चित जोड़े ।।
राम चरित मधुवन की नांई । जहां सु निशिदिन राम रहाई ।।
जहां समर्पण यदि सच होता । वहां प्रेम आ सभी संजोता ।।
तन मन सब आनंदित होता । बारंबार लगा कर गोता ।।

दोहा – गीत गाय माला जपै, तव शैया पर जाय ।
नींद न आवे तब तलक, ध्यान राम का लाय ।। 5 ।।
अजपा जापहु नित चले, प्रति दिन की यह बात ।
राम राम रटती रहै, जीवन बीता जात ।। 6 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उन्नीसवाँ अध्याय – संत तुलसीदास

दोहा – वृद्ध इवस्था जान जन, मृत्यु निकट लें मान ।
दुखी होंय नहिं रंच भी, धरें राम का ध्यान ।। 1 ।।

रतना मैया मृत्यु विचारै । वृद्ध शरीर अंत निरधारै ।।
दिन पर दिन दुर्वल तन होवै । कष्ट मिटै चिरनिद्रा सोवै ।।
हरको भी अति बूढ़ी होई । गणपति साठ साल का सोई ।।
रहे पुजारी सोइ सिधारे । गणपति को पूजा बैठारे ।।
रामू धाक जमाये अपनी । गंगेश्वर भी वन गये भजनी ।।
दैनिक क्रम रतना नहिं छोड़े । पूजा पाठ ध्यान मन जोड़े ।।
वृद्ध भक्त अब बैठन आबैं । रामायन नित गाय सुनाबैं ।।
स्वास्थ्य दिनोदिन गिरता जावे । दवा कोइ अब काम न आवे ।।

दोहा – अंत समय आये निकट, दवा न करती काम ।
वृद्ध अवस्था को निरख, होय दवा बदनाम ।। 2 ।।

निरख दशा रामू यों बोले । काशी लिवा चलूं मन तोले ।।
पर शंका यों उर उपजाती । मिलें न मिलें समझ ना आती ।।
मैं भी निर्बल कैसे जाऊँ । बोली मैया बात बताऊँ ।।
अब तो है बस मुझको मरना । स्वामी मिलें यत्न ये करना ।।
अन्त भला जिसका हो जावै । सदगति केवल वह ही पावै ।।
रामू कहा करें प्रभु किरपा । जीवन सकल उन्हें ही अरपा ।।
भजकर राम जिन्दगी काटी । वही समेंटेंगे अब माटी ।।
हरको अंदर से आ बोली । गुरू आबें नहिं होय ठिठोली ।।

दोहा – विस्वास हि फल दायका, कहते हैं सब लोग ।
हम को दर्शन होंयगें, तुम्हरे ही संयोग ।। 3 ।।
रतना कहि चिन्ता नहीं, अबस आयँ महाराज ।
बादा वे भूले नहीं, आय संभारें काज ।। 4 ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

कस्बे में यह बातें चलती । मैया मृत्यु निकट अब लगती ।।
दर्शन हित सब मिलने आवें । धीर धरौ सब यह समझावें ।।
तीव्र ताप ज्वर अब चढ़ आया । मन व्याकुल दर्शन नहिं पाया ।।
आश्वासन मिलने का दीन्हा । कैसा निठुर ह्रदय अब कीन्हा ।।
स्वामि बचन तब मृषा न होई । भक्त शिरोमणि कह सब कोई ।।
मेरे प्रान रहे अब अटके । दरस हेत नैना यह भटके ।।
नाड़ी भी अब रूक कर चलती । मिलन आस बस मन में पलती ।।
देख दशा धरती को सींचे । कुशा विछा तन राखा नीचे ।।
मुख में गंगाजल को डाला । तुलसी दल भी लाई बाला ।।
अर्ध चेतना तन में आई । प्रथम मिलन पति दर्श दिखाई ।।

दोहा – प्रथम रात पति मिलन का, करती रतना ध्यान ।
प्रकृति पुरूष संयोग का, रहता यही विधान ।। 5 ।।

तुमतो कहते पाकर रतना । जीवन धन्य हुआ है अपना ।।
तुंम सुन्दरता चित्त समाई । पूजा करूं यहै मन आई ।।
होता कवि सौन्दर्य उपासी । अति भावुक अरू गहन उदासी ।।
स्त्री पुरूष चाक दो रथ के । चलते संग संग हैं पथ के ।।
नारी पुरूष समान कहाते । प्रेरक पति की नारि बताते ।।
तभी चेतना सी है आई । भीर बहुत पर नहीं गुसाई ।।
लागे कहन लोग कछु ऐंसें । मैया हाल ठीक है वैसें ।।

दोहा – सुनी सान्त्वना सवन की, मैया समझी बात ।
मृत्यु सदा चिर सत्य है, व्यर्थ हमें समझात ।। 6 ।।

मैंने पति को बोध कराया । मोह जाल सब झूठी माया ।।
सत्य प्रेरणा दी थी मैने । दण्ड़ मिला बस मुझको सहने ।।
मृत्यु संन्निकट अब तो मेरे । प्राण चांहते तुम को हेरे ।।
शोर तभी कानों में आया । गुरू आये कोई चिल्लाया ।।
निकसत निकसत प्राण रूके अब । आश पूर्ण हो जाये अब सब ।।
रतना सुनी मधुर पति बानी । पलक खोल पति को पहिचानी ।।
देख स्वामि मन में मुस्काई । खूब आपने वात निभाई ।।
विदा देहु अव संत गुसाई । प्राण ज्योति पति ह्रदय समाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दोहा – वसन उढ़ा संस्कार हित, जुड़ा सभी समुदाय ।
करत राम धुनि प्रेम से, जमुना तट पै आय ।। 7 ।।
लकड़ी चंदन चिता पर, मैया दई लिटाय ।
गोस्वामी ने कर क्रिया, दीना शीश नवाय ।। 8 ।।
राम नाम धुन हो रही, सत्य राम का नाम ।
बाबा तुलसी चल दिये, निज आश्राम विश्राम ।। 9 ।।

उपसंहार

दोहा – हुलसी तुलसी जन्म दे, तुलसी लिख रामान ।
उपन्यास रतना वली, त्यों भावुक निर्मान ।। 1 ।।
नारी जीवन की व्यथा, है इसके दरम्यान ।
पतित्यक्ता रतनावली, कैसे बनी महान ।। 2 ।।
साधू बन जावें सभी, कर नारी का त्याग ।
नारी को ले संग तरे, तिनही के बड़ भाग ।। 3 ।।
रतनावली है रत्न सम, धरौ हिये के मांझ ।
कर प्रकाश सब ही दिसन, होन न देबें सांझ ।। 4 ।।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कवि परिचय

नाम– श्री अनन्त राम गुप्त

जन्म– 05/08/1934 ग्राम बड़ैरा, जिला दतिया (म.प्र.)

पिता– श्री सट्टूराम जी कुचिया – गहोई

व्यवसाय– सेवा निवृत प्रधानाध्यापक

संपर्क सूत्र– बल्ला का डेरा, झांसी रोड, भवभूति नगर (डबरा)
जिला ग्वालियर, म.प्र. 475110

कृतियां – अनेक अप्रकाशित कृतियां :–
1.भारतीय स्वतंत्रता 2.ईश्वर लीला विज्ञान आदि

बुन्देलखण्ड की माटी के ग्राम बड़ेरा. जिला दतिया (म.प्र.) में जन्मे श्री अनन्तराम जी गुप्त बुन्देली भाषा के रचनाकार हैं।

आपने 'हितायन' 'ओरक्षायश' 'पद्मावती' 'वृन्दावन' एवं 'वणिक चालीसा' 'गोत्रावली' 'दान दोहावली' 'गुप्ताजी की फागें' एवं 'रत्नावली' का भावानुवाद कर हिन्दी जगत में अपना स्थान बनाया है ।

आपकी साहित्य साधना आपकी पूजा है। आपने अपने सृजन से भवभूति नगर (डबरा) को सुवासित किया है । आप मुक्त मनीषा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति के आजीवन सदस्य एवं नगर की साहित्यिक गतिविधियों के सूत्राधार हैं।

पंचमहल की भाषा के प्रथम रचनाकार संत कवि कन्हरदास कें पदों को खोजकर कन्हर पदमाल एवं आस्था के दोहे का सम्पादन किया है। 'हितायन' 'ओरक्षायश' एवं राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त जी की जीवन झांकी आपकी चर्चित कृतियां हैं। आपके उज्जवल भविष्य के लिये शुभकामना व्यक्त करता हुं ।

राम जी शरण छिरोल्या
M.A. , M.Com. LLB
व्याख्याता – डी.ए.व्ही.उ.मा.विद्यालय
सह संपादक – शोध यात्रा (ग्वालियर)
निवासी भवभूति नगर, (डबरा)
जिला ग्वालियर (म.प्र.) 475110

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran